म	प	नि	सां	—	सां	नि	सां	निसां	ध	नि	प
ने	ऽ	न	न	ऽ	व	ह	त	--	नी	ऽ	र
म	प	सां	नि	प	प	ग	ग	म	रे	—	सा
प	न	घ	ट	ऽ	भ	ई	ऽ	ऽ	भी	ऽ	र
नि	सा	—	ग	म	प	ध	ध	नि	प	—	—
सु	धि	ऽ	न	ऽ	क	ल	स	ऽ	की	ऽ	ऽ

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	ध	—	नि	सां	सां	—	सां	—	—
नं	ऽ	द	दा	ऽ	स	प्र	भु	ऽ	सों	ऽ	ऽ
सां	—	सांनि	रें	—	सां	नि	सां	रें	ध	नि	प
श्री	ऽ	तऽ	बा	ऽ	ढी	अ	ति	ऽ	गा	ऽ	ढी
गं	गं	गं	रें	—	सांरें	सां	—	ध	नि	सां	सां
फे	ऽ	ल	प	ऽ	रीऽ	चा	ऽ	ऽ	य	ऽ	न
रें	सां	सांरें	सां	ध	नि	सां	नि	प	नि	म	प
स	र	सऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ल	कों	ऽ	ग

राग बडाना—ताल चौताल

तेरी मौंहकी मरोरनतें ललितत्रिभंगी भये
अंजन दै चितये भयेजु स्याम वाम ।
तेरी मुसिकान देखि, दामिनी सी कोंध जात,
दीन व्हे याचत राधे आधो लियो नाम ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों नचावे बाल, त्यों त्यों नाचत लाल,
अब तो मया कीजे, चलिये निकुंज धाम ।
'नंददास'प्रभु तुम बोलो तो बुलाय लेहु
उनको तो कलप बीते तेरी धरि जाम ॥ २ ॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	सां	रें	—	सां	नि	सां	सां	निध	नि	प
मों	—	ह	की	—	म	रो	—	र	न—	—	तें
म	म	—	प	नि	प	ग	ग	म	रे	—	सा
ल	लि	—	त	—	त्रि	भं	—	गी	भ	—	ये
नि	सा	ग	ग	म	म	म	प	—	नि	म	प
अं	—	ज	न	—	दे	चि	त	—	ये	—	भ
रें	—	सां	नि	सा	रें	सांनि	सां	पनि	प	निम	प
ये	—	जु	स्या	—	म	वा—	—	म	ते	——	री

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	प	नि	म	प	नि	सां	सां	सां	—	सां
ते	—	री	मु	—	स	का	—	न	दे	—	खि
नि	सां	रें	रें	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प
दा	—	मि	नि	—	सी	कौं	—	ध	जा	—	त
म	प	नि	सां	रें	रें	गं	गं	मं	रें	—	सां
दि	—	न	व्हे	—	या	च	—	त	प्या	—	री
रें	सां	सां	नि	सां	रें	सांनि	सांप	नि	प	निम	प
रा	धे	—	आ	—	घो	लि	यो	—	ना	——	म

राग अडाना—ताल चौताल (ध्रुपद)

बेनी निरखत भुजंग तजि पताल लोक गये
तेरे द्रग देखि मीन जल में दुरे हो ।
मुख देखे कलाहीन उडुगनपति व्योम बसे
दसनन द्युति देख तहां अनार दुरक परे हो ॥१॥

कुछ देखी चक्रवाक लागेरी निस जोग साध
तन देखि कंचन पावकमें जरि जरे हो ।
सिंघ बली कटि निहारी, कंचन करि विपति भारी,
खेमरसिकप्रभु निहारि डारत तृन तोरे हो ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	—	सां	—	सां	सां	रें	सां	सां	नि	प	प
बें	—	नी	—	नि	र	ख	त	भु	जं	—	ग
म	प	सां	सां	नि	प	ग	ग	म	रे	—	सा
त	जि	प	ता	—	ल	लो	—	क	ग	—	ये
रे	नि	सा	रे	म	म	प	—	निप	नि	सां	सां
ते	—	रे	द्र	—	ग	दे	—	खि-	मी	—	न
रें	सां	—	निप	नि	प	सां	—	प	प	निम	प
ज	ल	—	मैं-	—	दु	रें	—	—	हो	——	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	—	प	नि	ध	नि	सां	—	सां	—	सां
मु	ख	—	दे	—	खे	क	ला	—	ही	—	न
नि	सां	रें	रें	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प
उ	हु	ग	न	प	ति	व्यो	—	म	ब	—	से
म	प	नि	नि	सां	सां	गं	गं	मं	रें	—	सां
द	स	न	न	द्यु	ति	दे	—	ख	त	—	हाँ

रें	रें	सां	सांनि	सां	सां	रें	सां	नि	प	निम	प
अ	ना	र	दु-	र	क	प	रे	—	हो	—	—

राग अडाना—ताल धमार

काल्ह तुम हा हा करि छूटे हो मोहन अब तुम वही ढंग कीने ।
इतनेही में भूलि गये हो निपट चतुर प्रवीने ॥१॥
एसे निर्लज तुम कबके भये हो सुघरराय रंगभीने ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
सां	सां	सां	रें	सां	नि	सां	नि	—	प	—	म	म	प
का	ल्ह	तु	म	हा	—	—	—	—	—	—	क	रि	—
नि	प	प	मप	ग	ग	म	रे	—	सा	—	रे	ऩि	सा
छू	—	टे	हो--	मो	—	—	ह	—	न	—	अ	ब	—
रे	—	सा	—	सा	रें	—	सां	—	रें	सां	नि	ध	निप
तु	—	म	—	व	ही	—	—	—	ढं	ग	की	—	ने—

अन्तरा

×					२		०			३			
म	प	—	नि	म	प	—	सां	—	—	नि	सां	सां	—
इ	त	—	ने	—	—	—	ही	—	—	—	—	में	—
सां	—	नि	रें	—	सां	रें	सां	—	ध	नि	—	प	प
भू	—	—	लि	—	—	ग	ये	—	—	हो	—	—	नि

गं गं मं रें रें	सां रें	सां नि ध नि	सां सां सां रें
प ट – च तु	र प्र	वी – – ने	का ल तु म

अन्तरा–२

×	२	०	३
म प – नि म	प नि	सां सां –	नि सां सां –
ए – – से –	– नि	लॅ ज –	तु – म –
सां सां नि रें –	सां रें	सां ध –	नि – प प
क व – के –	– भ	ये – –	हो – – सु
गं गं मं रें रें	सां रें	सां नि ध नि	सां सां सां रे
घ र रा – य	रं ग	भी – – ने	का ल तु म

राग अडाना–ताल तीव्रा

सब गोकुलको जीवन गोपाललाल प्यारो ।
सुंदर मुख निरखत ही नयन चेंन पावत अति
गोपी ग्वाल आंखिन को तारो ॥१॥
रूपकी निधि कामकी सिधि जानत सब प्रेम की विधि ।
धेनुं सेन साजकें गृह आवत सवारो ।
“छीतस्वामी” गिरिवरधर अपने कर कोमल
नख राख लियो गोबर्धन भारो ॥२॥

स्थायी

२	३	×	२	३	×
नि प	म प	सां – –	नि ध	नि प	म ग म
ए –	स ब	गो – –	कु ल	को –	जी – –

रे — | सा सा | म प प | नि प | नि सां | रें नि सां
व — | न गो | पा — ल | ला — | — ल | प्या — —
नि प | निप मप |
रो — | स— व— |

अन्तरा

× २ ३ × २ ३
म प प | नि प | नि नि | सां सां सां | सां सां | रे सां
सुं — द | र — | मु ख | नि र — | ख त | ही —
सां नि सां | रें — | — सां | सां नि सां | निसां रेंसां | नि प
न य न | चे — | — न | पा — — | व— त— | अ ति
म प प | नि सां | रें रें | गं — मं | रें रें | सां —
गो — पा | ग्वा — | — ल | आं — — | खि न | को —
रें नि सां | नि प | निप मप |
ता — — | रो — | स— व— |

संचारी

× २ ३ × २ ३
सां — सां | नि ध | नि प | म प प | नि ध | नि प
रू — प | की — | नि धि | का — म | की — | सि धि

नि	–	सां	सां	–	नि	सां	रें	नि	सां	नि	ध	नि	प
जा	–	न	त	–	स	ब	प्रे	–	म	की	–	वि	धि
सां	–	सां	नि	प	म	प	ग	–	म	रे	–	सा	सा
धे	–	नु	से	–	–	न	सा	–	ज	के	–	गृ	ह
नि	सा	सा	रे	–	सा	रे	ग	–	म	रे	–	सा	–
आ	–	व	त	–	–	स	वा	–	–	रो	–	–	–

आभोग

×			२		३		×			२		३	
म	प	–	नि	प	नि	–	सां	सां	–	सां	सां	रें	सां
छी	त	–	स्वा	–	मी	–	गि	रि	–	व	र	ध	र
सां	नि	सां	रें	रें	सां	रें	गं	गं	मं	रें	सां	नि	सां
अ	प	ने	क	र	को	–	म	ल	–	न	ख	रा	ख
रें	रें	सां	नि	सांसां	सां	सांरें	सांनि	सां	निप	नि	म	प	मप
लि	यो	–	गो	वर	ध	न–	भा–	–	रो–	ए	–	स	व–

राग अडानो–ताल धमार

ततथेई बोलत डोलत गावत हसत हसावत ।
मटकत भौंह तट मुकुटकी चटक तामें, रिझवत लटकत आवत ॥१॥
हस्त चरन द्रग भेद दिखावत, सगीत जति लिये मान मिलावत ।
'कृष्णदास' गिरिधरन रासरस, रतिपति कोटि लजावत ॥२॥

स्थायी

३	×	२	०
नि प निम प	सां — — नि ध	नि प	ग — म
त त थे— ई	बो — — ल —	त —	डो — —
रे — सा —	म म प नि सां	रें सांरें	सां नि प
ल — त —	गा व त ह स	त ह—	सा व त

अन्तरा

×	२	०	३
म प — नि प	नि —	सां — सां	रें — सां —
म ट — क —	त —	भों — ह	त — ट —
नि सां सां रें —	— सां	रें नि सां	नि — प —
मु कु ट की —	— च	ट क —	ता — में —
म प नि सां —	रें —	गं गं मं	रें — सां —
रि क्ष — व —	त —	ल ट —	क — त —
रें नि सां नि ध	नि —	सां नि सां	नि प म प
आ — — — —	व —	त — —	त त थे ई

संचारी

×	२	०	३
सां नि — ध —	ध —	नि प —	म — प —
ह — — स्त —	च —	र न —	द्र — ग —

नि	सां	–	रें	सां	नि	सां	नि	ध	–	नि	–	प	–
मे	–	–	द्	–	–	दि	खा	–	–	व	–	त	–
सां	–	–	नि	प	म	प	ग	ग	म	रे	–	सा	–
सं	–	–	गी	–	–	त	ज	ति	–	लि	–	ये	–
म	–	–	प	–	नि	प	ग	–	म	रे	–	सा	–
मा	–	–	न	–	मि	–	ला	–	–	व	–	त	–

राग रायसा—संक्षिप्त विवरण

यह राग ‘ कान्हरा ’ का एक प्राचीन और अप्रचलित प्रकार है । ‘ नायकी ’ और ‘शहाना’ के संयोग से बना हुआ जो रायसा कानडा आजकल प्रचार में है वह हमारी परम्परासे भिन्न है । सम्प्रदाय की प्रणाली में अधिकतर बधाई, हिंडोला तथा होरी-धमार के पद प्राप्त होते है । नित्यक्रम के पद क्वचित् ही दृष्टिगोचर होते हैं । यह राग मध्यम ग्राम से याने मध्यम को षड्ज बनाकर गाने की प्रथा है । काफी थाट से उत्पन्न होता है । स्वर ग, नि, कोमल है तथापि आरोह में क्वचित् शुद्ध ग, नि का प्रयोग भी किया जाता है । जाति सम्पूर्ण है । कान्हरे के सभी प्रकारों का गानसमय मध्यरात्रि का माना जाता है, किन्तु मन्दिरो की सेवाप्रणाली में संध्यारती के बाद शयन के दर्शन तक यह राग गाया जाता है । वादी स्वर पंचम संवादी षड्ज हैं ।

स्वरविस्तार :—

(१) सा, निध, प, निसा, रेग रेसा

(२) सा, निसा, रेग, रेसा, रेग मप, धप, गम, गरेसा,

नि प ध, नि सा,

(३) पप, धप, गम, प, सां, निसां, निधप, मग नि सा,

(४) प सां, नि, पधनि, सां, नि ध प म ग नि सा,

राग रायसा—ताल अर्धआडा चौताल

झूलत राधामोहन, कालिंदीके कूल ।
सघन लताजु सुहावनी, चहुंदिस फूल फूल ॥१॥
सखी जुरि चहुंदिसते कमलनयनकी ओर ।
बोलत वचन अमृतमय 'नंददास' चित्तचोर ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सा	सा	सारे	नि	ध	प	धसा	ग	—	रे	सा	—	नि	सारे
झू	ल	त—	रा	—	धा	——	मो	—	ह	न	—	का	लिं—
ग	—	—	रे	—	—	—	प	प	—	प	—	ध	प
दा	—	—	के	—	—	—	का	लिं	—	दी	—	के	—
म	ग	म	प	म	प	—	गम	रे	सा	नि	प	ध	सारे
कू	—	—	ल	—	—	—	झू—	ल	त	रा	—	धा	——

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
पप	प	प	प	—	ध	पध	सां	नि	ध	प	मग	रेसा	निसा
सघ	न	ल	ता	—	जु	सु—	हा	—	व	नी	——	चहुं	दिस

ग	—	—	रे	—	—	—	पप	प	प	प	—	ध	प
फू	—	—	ले	—	—	—	चहुं	दि	स	फू	—	ले	—
म	ग	म	प	म	प	—	रेग	रे	सा	नि़	प़	ध़सा	रे
फू	—	—	ल	—	—	—	झू—	ल	त	रा	—	धा	—

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सा	सा	सारे	नि़	ध़प़	ध़	सारे	ग	रे	सा	—	सारे	नि़	सारे
स	खी	जु—	री	——	च	हुं—	दि	स	तैं	—	कम	ल	न—
ग	ग	—	रे	—	—	—	पप	प	प	प	प	ध	प
य	न	—	की	—	—	—	कम	ल	न	य	न	की	—
म	ग	म	प	म	प	—	ग	रे	सा	नि़	प	ध	सारे
ओ	—	—	र	—	—	—	स	खी	जु	री	—	च	हु—

राग सिंधूरा कान्हरा—सं. परिचय

सिंधूरा को सिंधूडा या सैंन्धवी भी कहते हैं । यह प्राचीन राग है । काफी थाट से उत्पन्न होता है । इस राग के आरोह में गान्धार और निषाद स्वर वर्ज्य होने से इस की जाति औडुव सम्पूर्ण मानी जाती हैं । षड्ज वादी तथा पंचम स्वर संवादी है । हर कोई समय गाया जा सकता है । दूसरे मतानुसार आरोह में निषाद कभी—कभी लिया जाता है । इस राग में काफी राग की छाया दिखाई देती है ।

'रागविबोध' ग्रन्थ में तथा 'हृदयप्रकाश' ग्रन्थ में इस राग का वर्णन 'सिंघोडा' नाम से किया गया है ।

अरोह : में ग–नि वर्ज्य प्रकार का सिंधुरा कान्हरा

आरोहावरोह : सा, रे म प, ध, सां । सां नि ध प म ग, रे सां.

उपर्युक्त वर्णन सिंधूरा कान्हरा का है ।

सिंधूरा का दूसरा प्रकार प्रचार में है, जो सिंधूड़ा नाम से प्रसिद्ध है ।

स्वरविस्तार : (१) सा, रेमपधसां, मपसां, धसां, धसारें गं, रेंसां,
पधसां, धसां रेंसां, निप, सां, निप, मपगरे,
रेमरे गरेसा,
(२) मंपनिसां, रें गं रें सां, सां, निध, मपग, रे,
मग, रेसा. रेमपध, सां, रेंसा नि, पध, मपनिसां,
रेंगंरेंसां,

[इस राग की प्रकृति वीर एवं अद्भुत रस की होने से इसी रसके वर्णन के पदों में इस राग खिल उठता है । हमारे मन्दिरों की कीर्तन परम्परा के इसी रस से सबन्धित निम्न पद यहां स्वरलिपिसहित दिये गये हैं । (१) वीर रस, (२) अद्भुत रस, (३) अद्भुत शृंगार इस क्रममें हैं ।]

राग सिंघुरा (कान्हरा)–ताल चर्चरी

आज रघुपति चढे लंकगढ लेन को ।
अवनि चंचल भई सेस सूधी गई
कमठकी पीठ फटि.मिलि गई रेंन को ॥१॥
होत अंदोल सागर सप्त दिगपाल
भये भयभीत अति उडि चले गेन को।

कहति मंदोदरी सुनहु दसकंध दिय
ले मिलो सीय राजिवदल नेंनको ॥२॥
वे प्रगट जगदीस सो हि ईसको बल कहा,
एक बनचर आय जारि गयो एनको ।
हरिनारायन स्यामदासके प्रभुसों बैर करि कंत पावै न सुख चेंन को ॥३॥

स्थायी

×			२		०		३		
रें	गं	रें	सां	सां	नि	नि	ध	म	प
आ	—	ज	र	घु	प	ति	च	ढे	—
ग	—	रे	ग	सा	रे	म	प	ध	पध
लं	—	क	ग	ढ	ले	—	न	को	—

अन्तरा

×			२		०		३		
म	म	म	प	ध	सां	ध	सां	सां	—
अ	व	नि	चं	—	च	ल	भ	ई	—
रें	गं	रें	सां	सां	नि	सां	सां	नि	ध
से	—	स	—	सु	धी	—	ग	ई	—
नि	सां	सां	नि	ध	ग	गम	ग	रे	सा
क	म	ठ	की	—	पी	——	ठ	फ	टि

रें	रेंगं	रें	रें	सां	नि	सां	नि	ध	पध
उ	ऊ–	ग	ई	–	रे	–	न	को	–

राग सिंधूरा (कानरा)–ताल सूलताल

कान्ह कुंवरके करपल्लव पर मानों गोवरधन नृत्य करे ।
ज्यौं ज्यौं तान उठत मुरलीकी त्यौं त्यौं लालन अधर धरे ॥
मेघ मृदंगी मृदंग बजाबत दामिनी दमकि मानों दीप जरे ।
ग्वाल ताल दे नीके गावत, गायनके सुत सुरजु भरे ॥
देत असीस सकल गोपीजन बरसाको जल अमित झरे ।
अति अद्‌भुत अवसर गिरिधरको 'नंददास' के दुःख जु हरे ॥

स्थायी

×		०		२		३		०	
सां	नि	सां	रें	नि	नि	ध	नि	प	ध
का	–	न्ह	कुं	व	र	के	–	–	–
सां	नि	ध	प	ग	ग	रे	–	सा	–
क	र	प	–	ल्ल	व	प	–	र	–
रे	–	म	–	प	ध	ध	सां	–	सां
मा	–	नों	–	गो	व	र	ध	–	न
सांरें	गं	रें	सां	–	रें	नि	ध	प	ध
नृ–	–	त्य	–	–	क	रे	–	–	–

अन्तरा

×		०		२		३		०	
म	—	प	ध	सां	—	सां	—	—	सां
ज्यों	—	ज्यों	—	ता	—	न	—	—	उ
रें	रें	ग॒ं	रें	सां	—	नि॒	ध	प	—
ठ	त	मु	र	ली	—	की	—	—	—
ग॒ं	—	रें	रें	सां	—	नि॒	ध	प	ध
त्यो	—	त्यों	—	ला	—	ल	—	न	—
सां	नि॒	ध	म	प	ग॒	रे	म	प	ध
अ	ध	र	—	ध	रे	—	—	—	—

संचारी

×		०		२		३		०	
सां	—	सां	सां	नि॒	ध	नि॒	ध	प	ध
मे	—	घ	मृ	दं	—	गी	—	—	मृ
नि॒	—	ध	प	ग॒	—	रे	—	सा	—
दं	—	ग	ब	जा	—	व	—	त	—
रे	—	म	म	प	प	ध	नि	प	ध
दा	—	मि	नी	द	म	की	मा	—	नों

नि	–	ध	प	ग	ग	रे	–	सा	–
दी	–	–	प	–	ज	रे	–	–	–

राग सिंधूरा (कान्हरा)—ताल धमार

जुगल वर आवत हें गठजोरे ।
संग सोभित ब्रखभाननंदिनी ललितादिक त्रन तोरे ॥१॥
सीस सहेरो वन्यो लालके निरखि हरखि चित चोरे !
निरखि निरखि वलि जाय 'गदाधर' छबिन वढी कछु थोरे ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
रें	गं	–	रें	–	सां	–	नि	–	–	ध	म	ध	प
आ	–	–	व	–	त	–	हें	–	–	ग	–	–	ठ
ग	–	–	रे	–	ग	सा	रे	म	–	प	–	ध	–
जो	–	–	रे	–	–	जु	ग	ल	–	व	–	र	–

अन्तरा

×					२		०			३			
म	–	प	नि	–	सां	नि	सां	सां	–	नि	सां	रें	गं
सं	–	–	ग	–	सो	–	भि	त	–	ब्र	–	ख	–
रें	सां	–	रें	नि	ध	प	म	प	–	नि	–	सां	–
भा	–	–	न	–	नं	–	–	द	–	नी	–	–	–
नि	नि	–	सां	–	सां	–	रें	नि		सां	–	सां	–
ल	लि	–	ता	–	दिं	–	क	–		त्र	–	न	–

रें नि – ध –	प ध	म प –	नि – सां –
तो – – रे –	– जु	ग : ल –	व – र –

राग विहाग–सं. विवरण

थाट बिलावल से विहाग राग उत्पन्न होता हैं। जाति ओडव–संपूर्ण है, क्योंकि इसके आरोह में रे, ध स्वर वर्जित हैं, और अवरोह संपूर्ण है। स्वर क्वचित् तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है, बाकी सब स्वर शुद्ध हैं वादी गन्धार और संवादी निषाद है। गान समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। विशेष : इस राग में तीव्र मध्मम का प्रयोग गुनीलोग विवादी के नाते से करना उचित्त समझते हैं। अवरोह में नि से प और ग से सा पर आते समय कुशलता रखनी पडती है। विहागरा राग की अपेक्षा सम्प्रदाय में बिहाग राग गानेकी प्रथा अष्टछापके समयके पश्चात् अधिक प्रचार में होने का सम्भवित है तथापि शयनसमय और तत्पश्चात् पोढवे की सेवा में गाये जाने वाले पदों की अधिक संख्या प्राप्त होती है। इस राग में आश्रय, विनंती, दीनता, वैराग्य इत्यादिक पद आजकल गाये जाते हैं।

पकड स्वर :–सा, गमप, गमग, रेसा.

आरोहावरोह :–साग, मप, निसां। सां, निधप, मग, रेसा।

राग विहाग–ताल चौताल (ध्रुवपद)

बेठे ब्रजराजकुंवर, प्यारी संग जमुनातीर।
सीतल बियार सखी मंद मंद आवे ॥१॥

अति उदार ढौजयंती स्याम अंग सोमा देत।
कंठ भुजा मेल दोउ हस बिहस गावे ॥२॥

झीनो पट दिपत देह प्रीतम सों अति स्नेह।
गौर स्याम सोभा देत कहत न बनि आवे ॥३॥

'सूरदास' मदनमोहन मोहनीसे बने दोउ।
हस हस जात अंग अरगजा लगावे ॥४॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	—	प	ग	ग	म	प	ग	म	ग	सा	सा
बै	—	ठे	—	ब्र	ज	रा	—	ज	कुं	व	र
नि़	—	प़	नि़	सा	सा	सा	सा	म	ग	—	सा
प्या	—	री	सं	—	ग	ज	मु	ना	ती	—	र
नि़	सा	सा	ग	—	म	प	—	नि	नि	सां	सां
सी	—	त	ल	—	बि	चा	—	र	स	खी	—
नि	—	प	प	ग	म	प	ग	म	ग	—	सा
मं	—	द	मं	—	द	आ	—	—	वे	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	सां	—	रें	सां	—	सां
अ	ति	उ	दा	—	र	बै	—	ज	यं	—	ती
सां	—	सां	नि	—	प	प	—	सां	नि	—	प
स्या	—	म	अं	—	ग	सो	—	भा	दे	—	त
सां	—	गं	गं	गं	मं	गं	—	सां	सां	—	सां
कं	—	ठ	भु	जा	—	मे	—	ल	दो	—	उ
सां	नि	प	प	ग	म	प	ग	म	ग	—	सा
ह	स	—	बि	ह	स	गा	—	—	वे	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	—	ग	म	प	नि	ध	प	—	प
झी	—	नो	—	प	ट	दि	प	त	दे	—	ह

ग	म	प	प	नि	नि	सां	सां	नि	नि	—	प
प्री	—	त	म	—	सौं	अ	ति	स	ने	—	ह
नि	ध	प	म	ग	म	प	ग	म	ग	—	सा
गौ	—	र	स्या	—	म	शो	भा	—	दे	—	त
ऩि	सा	—	प	—	म	प	म	ग	सा	—	सा
क	ह	—	त	—	न	ब	नि	—	आ	—	वे

राग बिहाग—ताल तीवा (मध्यलय)

पौढे माई मदन मोहन स्याम ।
अनन्य होइ चरणारविंद भज, सकल पूरन काम ॥१॥
अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारें, जोग भोग विश्राम ।
ऊमापति सुकदेव नारद, रटत निसदिन नाम ॥२॥
सकल कला प्रबीन गिरिधर, राधिका भुज वाम ।
कहत 'कृष्णा' सुबस बसिये श्री नंद गोकुल गाम ॥३॥

स्थायी

×			२		३		×			२		३	
म	ग	म	प	—	नि	सां	नि	—	प	पम	प	गम	ग
म	द	न	मो	—	ह	न	स्या	—	म	पौ-	ठे	मा-	इ
सा	ग	म	पम	प	ग	म	ग	—	म	ग	रे	सा	—
म	द	न	मो-	—	ह	न	स्या	—	—	—	—	म	—

अन्तरा

×			२		३		×			२		३	
प	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	गंरें	सां	सां	निध	सां	नि
अ	न	न्य	हो	इ	च	र	णा	--	र	बि	द्-	भ	ज
प	ग	म	प	नि	सां	रें	सां	नि	धप	पम॑	प	गम	ग
स	क	ल	पू	–	र	न	का	–	म–	पौ–	टे	मा–	इ

संचारी

×			२		३		×			२		३	
प	–	प	म॑	प	ग	म	प	नि	ध	पम॑	ध	प	–
अ	–	ष्ट	सि	धि	न	व	नि	–	धि	द्धा–	–	रे	–
म	ग	म	पम॑	प	ग	म	ग	–	रे	सा	रे	सा	–
जो	–	ग	भो–	–	ग	वि	श्रा	–	–	–	–	म	–

राग बिहाग—ताल मठताल (सूलताल)

जैसो हों तैसो तिहारो श्रींवल्लभ, अब जिन छांडि देहु मोहि करतें ।
बांह गहेकी लाज मन धरि हो, नाहि भरोसों मोहि साधन बलतें ॥१॥
तुम तजि और ठौर नहिं मोकों, जासों कहों जाय दुख भरतें ।
'रसिक' सिरोमनि श्रीवल्लभ महाप्रभु, राखौ चरन सरन भव डरतें ॥२॥

स्थायी

×				२		३			
प	म॑	ग	म	ग	–	सा	–	ऩि	–
जे	–	सों	–	हुं	–	ते	–	सो	–

प़	प़	नि़	नि़	सा	—	ग	—	सा	सा
ति	हा	—	रो	श्री	—	व	—	ल्ल	भ
नि़	सा	ग	म	प	—	प	नि	सां	सां
अ	ब	जि	न	छां	—	ड	दे	—	हु
नि	:—	प	म॑	ग	म	ग	—	सा	—
मो	—	ही	—	क	—	र	—	तें	—

अन्तरा

×				२		३			
ग	म	प	प	सां	—	सां	—	—	—
बां	—	ह	ग	हे	—	की	—	—	—
गं	—	सां	—	नि	निं	सां	नि	—	प
ला	—	ज	—	म	न	ध	र	—	हो
नि	सां	गं	मं	पं	मं॑	गं	—	सां	सां
ना	—	हीं	न	भ	रो	सो	—	मो	ही
नि	—	प	म॑	ग	म	ग	—	सा	—
सा	—	ध	न	ब	—	ल	—	तें	—

संचारी

×				२		३			
सा	सा	ग	म	प	—	प	—	—	—
तु	म	त्य	ज	औ	—	र	—	—	—
नि	—	प	—	ग	म	ग	—	सा	—
ठौ	—	र	—	न	हीं	मे	—	रे	—

प़	प़	नि़	—	|	सा	—	|	ग	—	—	म
जा	—	सो	—	|	जा	—	|	य	—	—	क
प	म॑	ग	म	|	ग	—	|	सा	—	सा	—
हों	—	दु	ख	|	भ	—	|	र	—	ते	—

राग बिहागरा (बिहागड़ा) सं. विवरण

बिहागरा–विहागड़ा राग को बिहाग की अपेक्षा प्राचीन राग माना जाता हैं। 'संगीत सार' नामक बंगाली ग्रन्थ में कहा है कि "वेहाग ये संस्कृत शास्त्रानुयायिक राग नहीं है, उसकी उत्पत्ति बिहंगडा राग से हुई है" [देखिये पं. श्रीभातखंडेजी कृत हिं. सं. पद्धति पु. १ गुजराती अनुवाद पृष्ठ–२१५]

अष्टछाप के आठों संगीताचार्योंने बिहागरा राग में ही पद–गान किया हैं, केवल श्री चत्रभुजदास और श्री छीतस्वामी की रचना में क्वचित ही, 'बिहाग' का उल्लेख प्राप्त होता है [देखिये कांकरौली प्रकाशन 'श्री चत्रभुजदास' तथा 'छीतस्वामी]'.

संगीत के शास्त्र ग्रन्थों में भी विशेषतः बिहागडा का ही नामोल्लेख प्राप्त होते हैं। पं. अहोबलने इस राग का उल्लेख निम्न प्रकार किया है :–

बिहागडे गनी तीव्रावारोहे तु रिवर्जिते।
गान्धारोद्ग्राहसम्पन्ने न्यासांशो निरचरो मतः ॥४४७॥

[सं. पारिजात]

भावार्थ–बिहागडा में गान्धार–निषाद दोनों तीव्र (शुद्ध) होते हैं और आरोही में ऋषभ स्वर वर्जित होता है। अवरोह सम्पूर्ण है, गाधार ग्रह स्वर है तथा निषाद स्वर पर न्यास है और वही स्वर अंश है।

'रागलक्षण ग्रन्थ' में बिहागडा का वर्णन इस प्रकार है :—

"मेलाच्चसंभवो धीरशंकराभरणाच्चवैं,
बिहागडेति रागश्च सन्यासं सांशकग्रहम् ।
आरोहे रिधवर्ज्य'चाप्यवरोहे समग्रकम् ॥"

भावार्थ-बिहागडा राग शंकराभरण थाट से उत्पन्न होता है। षड्ज अंश और न्यास है, आरोह में रि ध वर्ज्य हैं और अवरोह सम्पूर्ण है ।

उपर्युक्त उल्लेखों में बिहागड़ा का थाट बिलावल (शंकराभरण) कहा हैं और षाडव-सम्पूर्ण तथा औडव-सम्पूर्ण जाति का उल्लेख प्राप्त होता हैं । प्रचार में षाडव-सम्पूर्ण जाति से यह राग गाया जाता है ।

बिहागडा राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है । वादी गान्धार और संवादी निषाद स्वर है । चलन बिहाग के समान है, किन्तु इसमें तीव्र मध्यम न होने से तथा कोमल निषाद लगने से एवं आरोह में धैवत का प्रयोग होने से भिन्नता स्पष्ट हो जाती है । आरोह में ऋषभ वर्ज्य तथा अवरोह सम्पूर्ण होने से जाति षाडव—सम्पूर्ण मानी जाती है । आरोह में धैवत दुर्बल रहता है और वक्र रूप से प ध नि प, इस प्रकार लिया जाता है। तीव्र निषाद का प्रयोग आरोह में तथा अवरोह में भी किया जाता है । कोमल निषाद का प्रयोग केवल अवरोह में ही होता है । 'सां नि ध प, नि ध प,' इस प्रकार कोमल निषाद लगने से खमाज का अंग भी आता है, 'सां नि प, गमग' तथा 'पम, ग सा' यह स्वर-समुदाय होने से यह राग स्पष्ट हो जाता है । बिहागड़ा में बिहाग की अपेक्षा मध्यम स्वर का कुछ अधिक महत्त्व होता है, मध्यम को न्यास स्वर भी माना जाता है । गानसमय रात्रिका दूसरा प्रहर प्रचार

में है, किन्तु पुष्टिमार्गीय सेवाप्रणाली में यह राग शयन के दर्शन-समय तथा प्रायः शयनांतर मान—पौढवे के समय गाता जाता है।

आरोह—सा, ग, म, प, नि सां। अवरोह—सां, निप, निधप, गमग,
रेसानिधप, गमग, पमग, सा.

राग बिहागरा—ताल चौताल

प्यारी पग होलें होलें धर, जेसे तेरे नूपुर न बाजहिं।
जागेगो ब्रजको लोग, नाहिंन सुनायो जोग,
हाँ हाँ री हठीली नेंक, मेरो कह्यो कर ॥१॥
जोलौं ब्रजबीथिन माँहि, सघन कुंज—परछांहि,
तोलौं मुख ढाँपि चलि, कुंवरि रसिकवर।
'नंददास'प्रभु प्यारी, छिनहू न होउ न्यारी,
सरद उजियारी तामें जैसे कहूं रर ॥२॥

स्थायी

३		४		×		०		२		०	
ग	म	प	सां	नि	—	प	नि	ध	म	ग	सा
प्या	री	प	ग	हो	—	लें	हो	लें	—	ध	र
म	गम	प	ध	नि	ध	प	ध	ग	म	ग	सा
जे	से—	ते	रे	नूं	पु	र	न	बा	—	ज	हिं

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	म	गम	प	नि	नि	सां	सां	—	रें	सां	सां
जा	गे	——	गो	—	ब्र	ज	को	—	लो	—	ग
निं	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	—	नि	—	प
ना	—	हिं	न	—	सु	ना	यो	—	जो	—	ग
ध	नि	ध	प	ग	म	म	प	—	नि	—	सां
हां	—	हां	री	—	ह	ठी	ली	—	ने	—	क
नि	ध	प	ध	ग	म	ग	सा	म	गम	प	सां
मे	रो	—	क	ह्यो	—	क	र	प्या	री—	प	ग

संचारी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	—	ग	म	ध	नि	ध	प	—	प
जो	—	लों	—	ब्र	ज	बी	थि	न	मां	—	हिं
प	म	ग	म	प	नि	सां	सां	—	नि	—	प
स	ध	न	कुं	—	ज	प	र	—	छों	—	हिं
प	—	ध	नि	ध	प	ग	म	प	म	ग	सा
तो	—	लों	—	सु	ख	ढां	—	पि	च	—	लि
ऩि	सा	—	ग	म	प	म	ग	म	ग	—	सा
कुं	व	—	रि	—	र	सि	क	—	व	—	र

राग बिहागरा—ताल तीनताल

सुंदर जमुनातीररी, मनमोहन ठाडे ।
जबतें दृष्टि परी या मुख पर, तबतें रहत न धीर री ॥१॥

मृगमद तिलक अलक घुंघरारी, नासामुक्ता कीर री ।
'सूरदास'प्रभु बेनु बजावत, थाक्यो सरितानीररी ॥२॥

स्थायी

×		२		०		३	
सा	—	म	ग	प	प	नि	ध
सुं	—	द	र	ज	मु	ना	—
सां	—	नि	ध	प	—	म	ग
ती	—	—	र	री	—	म	न
गम	प	ग	म	ग	—	सा	नि़
मो—	—	ह	न	ठा	—	डे	—

अन्तरा

×		२		०		३	
प	प	नि	—	सां	—	सां	सां
ज	ब	तें	—	दृ	—	ष्टि	प

निसां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	निसां
री–	–	या	–	मु	ख	प	र–
नि	ध	प	मग	प	प	नि	नि
त	ब	तें	––	र	ह	त	न
सां	–	नि	ध	प	–	म	ग
धी	–	–	र	री	–	म	न

संचारी

×		२		०		३	
ग	म	ग	गम	प	प	म	गम
मृ	ग	म	द–	ति	ल	क	अ
पध	नि	ध	प	प	–	म	ग
ल–	क	घुँ	घ	रा	–	री	–
सा	–	ग	म	पध	नि	धप	म
ना	–	सा	–	मु–	––	का–	–
ग	–	–	रे	सा	–	–	–
की	–	–	र	री	–	–	–

राग बिहागडा–ताल धमार

प्रगट ह्वै मारगरीतिं दिखाई ।
परमानंदस्वरूप कृपानिधि, श्रीबल्लभ सुखदाइ ॥१॥

करि सिंगार गिरिधरनलाल को, जब कर बेनु गहाइ ।
ले दरपन सनमुख ठाडे व्हैं, निरखि निरखि मुसिकाइ ॥२॥
विविध भांत सामग्री हरिको, करि मनुहार लिवाइ ।
जल अचवाय सुगंधसहित मुख, बीरी पान खवाइ ॥३॥
करि आरति अनोसर पट दै, बेठे निज गृह आई ।
भोजन करि विस्राम छिनक ले, निज मंडली बुलाइ ॥४॥
करत कृपा निज दैवी जीवन पर, श्रीमुखबचन सुनाइ ।
बेनुगीत पुनि जुगलगीतकी रस बरखा बरखाइ ॥५॥
सेवारीत प्रीति व्रजजनकी, निजजन हित प्रगटाई ।
'दास' सरन हरि वागधीसकी, चरन रेनुनिधि पाई ॥६॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	–	नि	ध	–	प	–	ध	–
मा	–	–	र	–	ग	–	री	–	–	त	–	दि	–
नि	–	–	सां	–	सां	–	नि̱	ध	प	म	–	ग	–
खा	–	–	ई	–	प्र	–	ग	ट	–	व्है	–	–	–
नि̱	ध	प	ग	म	ग	–	सा	–	–	ग	–	ग	म
मा	–	–	र	–	ग	–	री	–	–	त	–	दि	–
प	–	–	ग	–	म	–	ग	–	–	सा	–	–	–
खो	–	–	–	–	–	–	ई	–	–	–	–	–	–

अन्तरा

×					२		०			३			
प	प	–	म	–	ग	म	प	–	–	नि	–	नि	–
प	र	–	मा	–	–	–	नं	–	–	द	–	स्व	–

सां	–	–	सां	–	गं	रें	सां	–	–	सां	–	सां	–
रू	–	–	प	–	क्रु	–	पा	–	–	नि	–	धि	–
नि	–	–	सां	–	–	–	नि	ध	प	प	–	ध	–
श्री	–	–	व	–	–	–	ल्ल	भ	–	सु	–	ख	–
नि	–	–	सां	–	सां	–	नि	ध	प	म	–	ग	–
दा	–	–	ई	–	प्र	–	क	ट	–	व्हे	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
प	प	–	प	–	प	–	ध	प	–	ग	–	म	–
क	रि	–	सिं	–	गा	–	–	र	–	गि	–	रि	–
प	प	–	नि	–	नि	–	सां	नि	–	प	–	–	–
ध	र	–	न	–	ला	–	–	ल	–	को	–	–	–
नि	ध	प	म	–	ग	–	प	–	–	ग	–	म	–
ज	व	–	क	–	र	–	वे	–	–	नु	–	ग	–
प	–	–	ग	–	म	–	ग	–	–	सा	–	–	–
हा	–	–	–	–	–	–	ई	–	–	–	–	–	–

आश्रय का पद

राग विहागरा–ताल धमार

भरोसो दृढ इन चरनन केरो ।
श्रीवल्लभ नखचंद्रछटा बिनु, सब जुग मांझ अंधेरो ॥१॥
साधन ओर नहीं या कलिमें, जासो होइ निवेरो ।
'सूर' कहा कहे द्विबिध आंधरो, बिना मोलको चेरो ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	—	सां	—	सां	—	नि	नि	—	प	—	ध	—
दृ	ढ	—	इ	—	न	—	च	र	—	न	—	न	—
नि	—	—	सां	—	सां	—	नि	ध	—	प	—	—	—
के	—	—	रो	—	भ	—	रो	—	—	सो	—	—	—
ध	नि	ध	प	—	म	ग	सा	सा	—	ग	—	म	—
दृ	ढ	—	इ	—	न	—	च	र	—	न	—	न	—
प	—	—	ग	—	म	—	ग	—	—	रे	—	सा	—
के	—	—	—	—	—	—	रो	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
प	—	—	सां	—	—	—	सां	सां	—	सां	—	सां	—
श्री	—	—	व	—	—	—	ल्ल	भ	—	न	—	ख	—
सां	—	—	रें	—	सां	—	नि	ध	—	सां	—	नि	—
चं	—	—	द्र	—	छ	—	टा	—	—	बि	—	न	—
प	प	—	ग	—	म	—	प	—	—	नि	—	—	सां
स	व	—	जु	—	ग	—	मां	—	—	झ	—	—	अं
नि	ध	—	प	—	सां	—	नि	ध	—	प	—	—	—
धे	—	—	रो	—	भ	—	रो	—	—	सो	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
प	—	—	प	—	प	—	प	—	—	ग	—	म	—
सा	—	—	ध	—	न	—	ओ	—	—	र	—	न	—
प	—	—	नि	—	—	—	सां	सां	—	नि	—	—	—
हीं	—	—	या	—	—	—	क	लि	—	में	—	—	—
ध	नि̱	ध	प	—	म	ग	सा	—	—	ग	—	म	—
जा	—	—	सो	—	—	—	हो	—	—	त	—	नि	—
प	—	—	ग	—	म	—	ग	—	—	रे	—	सा	—
वे	—	—	—	—	—	—	रो	—	—	-	—	—	—

* * *

'संगीत सुबोधिनी'

संगीत स्वरलिपि, स्वरक्षान तथा संगीत के पारिभाषिक शब्दो की सविस्तार प्रारंभिक माहिती के उपरान्त १५ रागों में लगभग–७० कीर्तनों को स्वरलिपि सहित अंकित किये गये है। जो इस ग्रन्थ में दि गई स्वरलिपियों से अतिरिक्त हैं. पं. भारखंडे तथा विष्णुदिगंबरजी की संस्थाओ के किसी भी परीक्षा केन्द्र की दो वर्ष तक की परीक्षा के अभ्यास की दृष्टि से हिन्दी में प्रसिद्ध किया गया है। हवेली संगीत तथा परीक्षा दोनोका लाभ प्राप्त होगा।

न्यो. रु. २०/– (सजिल्द)

प्रकाशक : अष्टछाप संगीत कला केन्द्र, ६०, नायकनगर अहमदाबाद–१४

राग वसन्त—संक्षिप्त विवरण

भारतीय संगीत के प्राचीनतम रागों में वसन्त राग का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह राग ऋतुप्रधान है। वसंतऋतु में हर कोई समय गाने की शास्त्राज्ञा है। जिस का यथार्थ पालन पुष्टि सम्प्रदाय की सेवाप्रणाली में आज तक हो रहा है। बसन्तपंचमी से लेकर पूर्णिमा तक यह राग मंगला से शयन पर्यन्त की सेवा तक यानि दिनभर इसी राग में कीर्तन गाये जाते हैं। इन सभी पदों को "वसन्त के पद' कहे जाते हैं। इन दिनों में होरी खेल की आरम्भ की सामान्य भावना प्रगट होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने गोपीजनों के साथ ब्रजमण्डल में चोवा, चन्दन, अगर, कुंकुमा, अबीर, गुलाल, कैसू—कुसुम, पिचका और पिचकाई इत्यादि के रंगबिरंगी साधनों के माध्यम से विविध प्रकार की होरीखेल की लीलाओं का गुणगान वसन्त के ४० दिनों तक गाये जाते हैं। मघा शु. १५ के बाद होरी खेल की मात्रा क्रमशः बढती रहती हैं, और धुरेंटी (डोल—यात्रा) तक 'धमार' के पद गाये जाते हैं। ये पद समयानुसार विविध रागों के साथ विविध तालों में गाये जाते हैं, किन्तु अबिकतर 'धमार' ताल में गाये जाने की प्रथा होने के कारण सभी पदों को 'धमार के पद' कहाहे जाता है। पूर्णिमा से पश्चात् वसन्त के पद गौण हो जाते हैं तथापि डोलयात्रा तक यह राग गाया जा सकता है। अष्टछापसंगीतपरम्परा में वसन्त के चार प्रकार माने गये हैं। १. शुद्ध वसन्त २. ललित वसंत ३. हिंडोल वसन्त और ४. पंचम वसन्त। वसन्त के वे चारों प्रकार आज से अर्धशताब्दी पूर्व कितने उत्तम कीर्तनकारों से सुने जाते थे। उस समय के सुने हुए प्रकारों को लक्ष्य में रखकर प्रथम हम 'शुद्ध वसन्त' की चर्चा कर रहे हैं।

संगीतदर्पण :—

वसन्ती स्यात्तु संपूर्णा सत्रया कविता बुधैः।

संगीतसाज्ञमृत, पृष्ठ (१७—१८) :—

शंकराभरणीयो यो मेलः स्यात्तत्र चारभीं ॥
पूर्णा सांशग्रहन्यासा सायंगेया शुभप्रदा ।
सापूर्णः सग्रहः सांशी रागांगमिति कथ्यते
इति शुद्ध वसन्तः ॥

राग कपद्रुम :—

वसन्ती स्यात्तु संपूर्णा षड्जांशग्रहन्याससंयुता ।
वसन्तकाले विदुषा प्रगीयते साधुना ॥

चतुर्दण्डप्रकाशिका :

रागः शुद्धो बसन्ताख्यो रागांगो गीयते प्रगे ।
शंकराभरणाख्यातरागमेलसमुद्भवः ॥

उपर्युक्त विधानों से स्पष्ट होता है कि यह शुद्ध बसन्त सम्पूर्ण जाति है और उन का मेल यानि थाट बिलावल (शंकराभरण) है तथा ग्रहन्यासस्वर षड्ज हैं ।

शुद्ध थाटके वसंत के संबंध में स्व. उस्ताद नजीरखां कहेते थे कि * "उन की परंपरा में यह प्राचीन वसंतको 'भरतमत–वसंत" कहलाता है । जो 'शुद्ध वसंत' है । कुछ ग्रंथो के मतानुसार हमारे शुद्ध वसंत में भी आरोह सा ग म ध निसां है ओर अवरोह में वक्र रूप से पंचम तथा शुद्ध रिषभ स्वर लिया जाता है। तथापि कवचित कोमल रिषभ का प्रयोग विवादी के नाते से किया जाय तो कोई राग हानी नहीं है ।

शंकराभरण थाटका वसन्त दाक्षिणात्य पद्धति में प्रचलित था । उत्तरीय संगीतपद्धति में अष्टछाप के समय में भी इसी थाटका वसन्त प्रचार में आया । इसी परंपरा अनुसार आज भी यह वसंत का प्रकार

---

० और०० का
भारतखण्डे–संगीतशास्त्र (हिन्दी), पृष्ठ-२१०
* संगीत, मई अंक, सन १९५७

पुराने कीर्तनकारों से सुना जा सकता है, जो उपर्युक्त स्व. उस्ताद नजीरखां के कथनों से स्पष्ट होता है। ख्यालगायन की उत्पत्ति के पश्चात् इस राग में परिवर्तन होने पर आज प्रचार में कोमल ऋषभ, धैवत एवं दोनों मध्यमोंका पूर्वीथाट का प्रकार ही वसन्त माना जाता है।

अष्टछाप परम्परा में गाये जाने वाले इस शुद्ध वसन्त का थाट बिलावल (शंकराभरण) कहा जायगा। अतः इनमें लगने वाले सभी स्वर शुद्ध हैं। आरोह में ऋषभ और पंचभ स्वर वर्ज्य हैं अतः उनकी जाति औडव सम्पूर्ण हैं। वसन्त के सभी प्रकारोंमें सप्तक के पूर्वांग में गौण रहने वाले दोनों ऋषभ उत्तरांग में चमकते रहते हैं। शुद्ध ऋषभ और पंचम का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया जाता हैं। शुद्ध ऋषभ का प्रयोग अधिकतर तार सप्तक में ही होता है, जिससे रागका सौन्दर्य बढता है। तीव्र मध्यमको बचाकर षड्ज मध्यम और धैवत मध्यम की संगति में शुद्ध मध्यम को लेते समय वसन्त का शुद्ध प्रकार स्पष्ट होता है। वसन्त राग के सभी प्रकारों में वादी स्वर मध्यम, संवादी षड्ज (तार सप्त का) प्रचार में भरतमत वसंत, कृष्ण वसन्त, हेमन्त वसन्त, इत्यादि नाम हैं, किन्तु हमारी परम्परामें निम्न नाम प्राप्त होते हैं।

राग वसन्त (थाट शंकराभरण)—संक्षिप्त विवरण

थाट शंकराभरण (बिलावल), जाति औडव-सम्पूर्ण, स्वर सभी शुद्ध। समय वसन्त होरी के दिनों में वसन्तके सभी प्रकार किसी भी प्रहर. मे। यह राग उत्तरागप्रधान है।

आरोह :— सा, गम, ध नि, सां

अवरोह :—सां, नि, ध, प, म, ग, रेसा

चलन :—सा, सा, म, म, मग, म, ग, मध, निसां, सां, सां,
सांनिध, निध, निध, म, ग, मप, मग, म, ग, मग, रे सा, म,
प, म, मप, मग, मध, नि, सां, सां, निध, प, मग, प, म, मध, सां,
सां, सां, निध, मप, मग, मध, सां, सां, ध, रें, सां, निध, मप,

मग, मध, निसां, मग, मधनिसां, ध, मधनिसां, रें रें, सां, नि, धप, मग, मधनिसां ।

राग बसन्त (ललित अंग)

सम्प्रदाय का यह ललित बसन्तका थाट मारवा कहा जायगा । इस प्रकार में दोनों मध्यम, रे कोमल तथा पंचम वर्ज्य होता है । पूर्वांग में निरेगम, ममग इस स्वरसमूह से ललितांग स्पष्ट होता है । निषाद का प्रयोग आरोह मे कम प्रमाण में होता है । पंचम वर्ज्य होने से जाति षाडव-षाडव है ।

स्वर :–निरेगम, मग, मध, निसां

राग बसन्त (हिंडोल अंग)

सम्प्रदाय के लिखित पद संग्रहों में हिंडोल वसन्तका उल्लेख दिखाई देता है । इस प्रकार में दोनो मध्यम, पंचम वर्ज्य, ऋषभ कोमल, अन्य स्वर शुद्ध, आरोह में ऋषभ वर्ज्य.

जाति :–ओडव-षाडव

स्वर :–सा, सामम, ग. मध, निसा ।

मध, निसां, सां, रेंरेंसां, सां, निध, निसांगं, मंगंरें सां, निधमग, मधनिसां ।

इस राग के चलन में आरोह में ऋषभ वर्ज्य है, जैसे सागमगरेसा और ललित बसन्त में आरोह अवरोह दोनों में कोमल ऋषभ का प्रयोग किया जायगा । शुद्ध मध्यम की अपेक्षा तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिक होता है ।

राग बसन्त (पंचम अंग)

इस प्रकार में दोनो मध्यम, दोनो ऋषभ सहित सभी शुद्ध स्वरोंका प्रयोग होता है । विवादी स्वर के नाते से क्वचित् ध कोमल का प्रयोग भी हो सकता है । इस राग को कोई कृष्ण वसन्त भी कहते हैं शुद्ध वसंत

के स्वरो में क्वचित् धनिध इस प्रकार के स्वर लगनेसे उसको कोई बसन्त बहार कहने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु यह हमारी समझ में नहीं आता। कोमल निषाद का प्रयोग विवादी स्वरके नाते से होता हो तो कोई हरकत नहीं है। सम्प्रदाय की दृष्टि से इस प्रकार को पंचम बसन्त कहना सुसंगत होगा।

राग ललित बसन्त–ताल तीव्रा

श्रीवल्लभ प्रभु करुनासागर, जगत–उजागर गाइये।
निरखि निरखि मंगल मुखकी छबि, बलि बलि बलि बलि जाइये ॥१॥
जिनकी कृपा-अनुग्रहतें श्रीगिरिधरलाल लडाइये।
अनायास सब सुखकों लहिये, जीवनको फल पाइए ॥२॥
चरन-परस तन रूप दरस, सबही दुख दूरि बहाइये।
श्रीवल्लभगुन गाइये यातें 'रसिक' कहाइये ॥३॥

स्थायी

×			२		३		×			२		३	
सा	म	—	म	म	म	म	म̍	म	ग	म̍	ध	सां	सां
श्री	व	—	ल्ल	भ	प्र	मु	क	रु	ना	सा	—	ग	र
रें̱रें̱	सां	सां	नि	—	ध	ध	म̍ध	नि	ध	म̍	ग	रे̱	सा
जग	त	उ	जा	—	ग	र	गा—	—	इ	ये	—	—	—

अन्तरा

×			२		३		×			२		३	
धध	म̍	ध	सां	सां	सां	—	निरें̱	गं	मं̍	गं	रें̱	सां	सां
निर	खि	नि	र	खि	मं	—	गल	मु	ख	की	—	छ	बि

रेंसां नि ध | नि ध | म॑ म म॑ म ग | म॑ ध | सा –
बलि ब लि | ब लि | ब लि | जा – इ | ये – | – –

संचारी

× २ ३ × २ ३
नि़ रे॒ ग | म म– | म | म॑ ग म | म॑ ध | सां –
जि न की | कृ पा– | अ | नु ग्र ह | तें – | श्री –
रें॒सां नि ध | म॑ ध | सां सां | नि ध म॑ | म ग | रे॒ सा
गिरि ध र | ला – | ल ल | डा – इ | ये – | – –

राग बसंत (ललित अंग)—ताल त्रिताल (मात्रा १६)

खेलत बसंत निस पिय संग जागी ।
सखीवृंद गोकुलकी सींवा, गिरिवरधरपदरज—अनुरागी ॥१॥
नवल निकुंजमें गुंजत मधुप पिक, बिबिध सुगंध-छींट तन लागी ।
'कृष्णदास' स्वामिनी जुवतिजूथचूडामनि रिझवत प्रानपति राधा
बडभागी ॥२॥

स्थायी

० ३ × २ ० ३ × २
म॑ ध | सां सां | रें॒ सां | सां सां नि ध | म॑ मग | म॑ ध | नि सा
खे ल | त ब | सं त | नि स पि य | सं ग– | जा – | गी –

अन्तरा

० ३ × २ ० ३ × २
ध मध निसां सांसां —रें रेंसां —नि —ध —
स खी- वृं- दगो —कु लकी —सीं —वा —
नि रेंगं मंगं गंरें सांसां सांनि धमध निसां निध मग
गि रिव रध रप दर जअ नुरा- --गी- --

संचारी

० ३ × २ ० ३ × २
ग रेसा निसाम —म ममं मग गमं धनि सां
न वल नि-कुं —ज मेंगुं जत मधु पपि क
सां रेंसां सांनि धनिध धम मम गमं धसां —
बि बिध सुगं —ध छीं— टत नला —गी —

राग बसंत (शुद्ध थाट)–ताल चौताल

लाल ललित ललितादिक संग लिये विहरतरी, बरबसंत ऋतुकला सुजान।
फूलनकी कर गेंदुक लिये पटकत पट उरज छिये, हसत लसत हिलिमिलि सब सकल गुणनिधान ॥१॥

खेलत अतिरस जो रह्यो रसना नहीं जान कह्यो,
निरखि परखि थकित भये सघन गगम जान।
"छीतस्वामी" गिरिवरधर, (श्री)विट्ठलपदपद्मरेणु,
बर प्रताप महिमातें कियो कीरतिगान ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	सां	सां	सां	सां	रेंसां	नि	सां	नि	ध	ध
ला	—	ल	ल	लि	त	ल–	लि	ता	–	दि	क
ध	धनि	ध	प	म	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध
सं	—	ग	लि	ये	–	बि	ह	र	त	री	—
म	म	म	म	—	ग	म	ध	नि	सां	—	—
ब	र	ब	सं	—	त	रि	तु	क	ला	–	—
गं	रें	रें	सां	—	सां	नि	ध	ध	प	म	ध
सुं	—	द	र	—	सु	जा	—	न	री	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	सां	सां	सां	—
फू	ल	न	की	क	र	गें	दु	क	लि	ये	—
सां	सां	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रें	सां	सां	—
प	ट	क	त	प	ट	उ	र	ज	छि	ये	—
सां	सां	नि	ध	म	ग	म	ध	प	ध	ध	ध
ह	स	त	ल	स	त	हि	ल	मि	लि	स	ब
रें	रें	रें	सां	सां	सां	नि	ध	ध	प	म	ध
स	क	ल	गु	न	नि	धा	—	न	री	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	नि	ध	—
खे	—	ल	त	अ	ति	रं	ग	जु	र	ह्या	—
प	प	म	—	ग	ग	म	गम	ध	ध	ध	—
र	स	ना	—	न	हि	जा	—	त	क	ह्यो	—
ध	नि	ध	प	म	ग	म	ध	प	ध	ध	—
नि	र	ख	ह	र	ख	थ	कि	त	भ	ये	—
ध	नि	ध	प	म	ग	म	ग	रे	सा	ग	म
स	ध	न	ग	ग	न	जा	—	न	री	—	—

राग—बसंत (शुद्ध थाट) ताल—धमार

गिरिधरलालकी बानिक उपर, आज सखी तृन टूटें री।
चोचा चंदन अगर कुँमकुमा, पिचकाईन रंग छूटें री ॥१॥
लालके नैना रगमगे देखियत, अंग अनंगन लूटें री।
'कुष्णदास' धनिधन्य राधका, अधरसुधा रस घूटेंरी ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
ग	म	—	म	—	म	—	म	—	—	म	—	ग	—
गि	रि	—	ध	—	र	—	ला	—	—	ल	—	का	—
ध	प	—	म	—	ग	—	म	ध	—	ध	—	ध	—
बा	—	—	नि	—	क	—	उ	—	—	प	—	र	—

म	ध	—	नि	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
आ	—	—	ज	—	स	—	खी	—	—	त	—	न	—
म	ध	—	नि	—	रें	—	सां	—	—	ध	—	प	—
तू	—	—	टे	—	—	—	री	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
ध	—	—	म	—	ध	—	सां	—	—	सां	—	सां	—
चो	—	—	वा	—	—	—	चं	—	—	द	—	न	—
सां	सां	—	सां	—	सां	—	नि	रें	—	सां	—	—	—
अ	ग	—	र	—	कु	—	म	कु	—	मा	—	—	—
नि	नि	—	ध	—	प	—	म	ग	—	म	—	ध	रें
पि	च	—	का	—	—	—	इ	न	—	रं	—	ग	—
सां	—	—	ध	—	म	—	ध	नि	—	सां	—	—	—
छू	—	—	टे	—	—	—	री	—	—	—	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
म	—	—	म	—	म	—	म	—	—	म	—	ग	—
ला	—	—	ल	—	के	—	नै	—	—	ना	—	—	—
म	प	—	म	—	ग	—	म	ध	—	ध	—	ध	—
र	ग	—	म	—	गे	—	दे	खि	—	य	—	त	—
म	ध	—	नि	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
अं	—	—	ग	—	अ	—	नं	—	—	ग	—	न	—
म	ध	—	नि	—	ध	—	प	—	—	म	—	—	—
लूं	—	—	टे	—	—	—	री	—	—	—	—	—	—

आभोग

×					२		०			३			
गं	–	–	गं	–	गं	–	–	गं	–	रें	–	रें	–
कृ	–	–	ष्ण	–	दा	–	–	स	–	ध	–	न्य	–
सां	–	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	नि	–	–	–
ध	–	–	न्य	–	रा	–	–	धि	–	का	–	–	–
ध	नि	–	ध	–	ध	–	म	ध	–	नि	–	सां	रें
अ	ध	–	र	–	सु	–	धा	–	–	र	–	स	–
सां	–	–	ध	–	म	–	ध	नि	–	सां	–	–	–
लू	–	–	टे	–	–	–	री	–	–	–	–	–	–

राग-बसत, (शुद्ध थाट) ताल-धमार

खेलत वसंत गिरिधरनलाल ।
जहां लाग्यो अबीर गुलाल भाल ॥१॥

केसरि छिरकत नवलवाल ।
लपटावत चोवा अति रसाल ॥२॥

रही पाग ढरकि अर्ध भाल ।
देखत मनमथ अति भयो विहाल ॥३॥

चंदन लाग्यो दुहुं गाल ।
तब मुरली धर रिझवत गोपाल ॥४॥

श्रीगोवर्धनधर रसिकराइ ।
"चतुर्भुजदास बालिहारी जाइ ॥५॥

स्थायी

३	×	२	०
म — ग —	म ध — नि —	सां —	— सां —
खे — — —	ल त — ब —	सं —	— त —
नि — ध —	प प — म —	म —	— म —
गि — रि —	ध र — न —	ला —	— ल —

अन्तरा

३	×	२	०
सां — सां —	सां रें — रें —	— —	गं रें —
ज — हां —	ला — — ग्यो —	— —	अ वी —
सां — नि —	ध प — ध —	सां —	— सां —
र — गु —	ला — — ल —	भा —	— ल —

संचारी

×	२	०	३
ध — — नि —	सां —	सां सां —	नि — ध —
के — — स —	रि —	छि र —	क — त —
प प — म —	म —	— म —	ध — ध —
न व — ल —	बा —	— ल —	ल — प —

आभोग

×	२	०	३
सां — — रें —	रें —	सां — —	सां — — —
टा — — व —	त —	चो — —	वा — — —
नि ध — नि —	सां —	— सां —	म — ग —
अ ति — र —	सा —	— ल —	खे — — —

राग बसन्त (शुद्ध थाट)—ताल सूलताल

बसन्त रितु आई आयो पिया घर, फूले बन उपवम हों फूली सब तन।
विरहविथा गई पतझर भई नई, उनई कोंपल आनंदित घन ॥१॥
मत्त मधुपगन गुंजत कूजत कोकिल धुनि, अलाप गावत सव ब्रजजन।
"हरिबल्लभ" प्रभुकी वलि बलि जैये, केसेक रिझैये इनहीको मन ॥२॥

स्थायी

×		०		२		३		०	
सां	सां	—	सां	नि	ध	नि	ध	प	—
ब	सं	—	त	रि	तु	आ	—	ई	—
प	—	म	ग	ग	—	ध	ध	—	—
आ	—	यो	पि	या	—	घ	र	—	—
नि	ध	प	—	म	ग	म	ध	ध	ध
फू	—	ले	—	ब	न	उ	प	व	न
सां	—	रें	—	सां	—	नि	ध	प	म
हों	—	फू	—	ली	—	स	ब	त	न

अन्तरा

×		०		२		३		०	
ध	ध	म	ध	सां	—	सां	सां	—	—
बि	र	ह	वि	था	—	ग	ई	—	—
गं	गं	गं	गं	गं	रें	सां	सां	—	—
प	त	झ	र	भ	ई	न	ई	—	—
रें	रें	सां	—	नि	—	ध	—	ध	—
उ	न	ई	—	कों	—	प	—	ल	—

म	—	म	—	ग	ग	म	—	ध	—
आ	—	नं	—	दि	त	घ	—	न	—

संचारी

×		०		२		३		०	
सां	—	सां	सां	नि	ध	प	—	म	—
म	—	त्त	म	धु	प	ग	—	न	—
प	—	ग	ग	म	—	ध	ध	—	—
गुं	—	ज	त	कू	—	ज	त	—	—
नि	ध	सां	सां	सां	सां	सां	नि	ध	ध
को	—	कि	ल	धू	नि	अ	ला	—	प
नि	ध	म	म	ग	ग	म	ध	ध	ध
गा	—	व	त	स	ब	ब्र	ज	ज	न

राग वसन्त (हिंडोल वसंत)—ताल धमार

हरिरिह व्रजयुवतीशतसङ्गे ।
विलसति करिणीगणावृतवारणवर इव रतिपतिमानभङ्गे ॥ध्रुव॥ × × × × ×

"आगे प्रथमखण्ड, पृष्ठ १०९ पर देखिये ।"

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	—	सां	—	सां	—	नि	ध	—	नि	—	सां	—
व्र	ज	—	यु	—	व	—	ती	—	—	श	—	त	—
नि	ध	—	म	—	ग	—	म	ध	—	निं	—	सां	—
स	—	—	ङ्गे	—	—	—	ह	रि	—	रि	—	ह	—
नि	रें	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
व्र	ज	—	यु	—	व	—	ती	—	—	श	—	त	—

म	ध	—	म	—	ग	—	म	ग	—	रे	—	सा	—
स	—	—	—	—	—	—	ङ्ग	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
मं	ध	—	नि	—	सां	—	सां	सां	—	सां	—	—	सां
वि	ल	—	स	—	ति	—	क	रि	—	णी	—	—	ग
रें	—	—	रें	—	रें	—	गं	रें	—	सां	—	सां	—
णा	—	—	वृ	—	त	—	वा	—	—	र	—	ण	—
नि	सां	—	नि	ध	म	ग	म	ध	—	नि	रें	सां	—
व	र	—	इ	व	र	ति	प	ति	—	मा	—	न	—
नि	ध	—	म	—	ग	—	म	ध	—	नि	—	सा	—
भ	—	—	ङ्ग	—	—	—	ह	रि	—	रि	—	ह	—

संचारी

×					२		०			३			
सा	—	—	सा	—	म	—	म	—	—	म	—	म	—
त्रि	—	—	भ्र	—	म	—	सं	—	—	भ्र	—	म	—
म	म	—	ग	—	ग	—	म	ध	—	नि	—	सां	—
लो	—	—	ल	—	वि	—	लो	—	—	च	—	न	—
रे	—	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	नि	—	ध	—
भ्रू	—	—	चि	—	त	—	सं	—	—	चि	—	त	—
म	—	—	ग	—	म	—	ग	—	—	रे	—	सा	—
भा	—	—	—	—	—	—	वं	—	—	—	—	—	—

राग वसन्त (पंचम अंग)–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

ऋतु वसंत तरु लसंत मन हसंत कामिनी भामिनी सब अंगअंग रमत फागरी।
चर्चरी अति विकट ताल लागत संगीत रसाल उरप तिरप लास्य तांडव लेत लागरी॥१॥
बंदन बूका गुलाल छिरकत नेन भाल लाल गाल मृगज लेप अधर दागरी।
गिरिवरधर रसिकराय मेचक मुदरी लगाय कंचुकी पर छाप दीनी चकित नागरी ॥२॥
बाजत रसना मंजीर कूजत पिक मोर कीर पवन धीर जमुनातीर महल बागरी ।
"विष्णुदास" प्रभु प्यारी भेटत हंसि देत तारी कामकला निपट
निपुन प्रेम आगरी ॥३॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	सां	नि	ध
रि	तु	ब	सं	त	त	रु	ल	सं	त
नि	ध	ध	प	पम	गम	ध	ध	ध	—
म	न	ह	सं	त–	का–	—	मि	नी	—
म	म	म	म	ग	मं	ध	नि	सां	सां
भा	मि	नी	स	ब	अं	ग	अं	—	ग
गं	गं	गं	रें	सां	नि	ध	नि	म॑	ध
र	म	त	—	—	फा	—	ग	री	—

अन्तरा

×		२			०		३		
ध	धध	मं	ध	नि	सां	सां	सां	—	सां
च	र्चरी	अ	ति	वि	क	ट	ता	—	ल
गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	सां	—	सां
गा	व	त	सं	गी	त	र	सा	—	ल

सांरें	सां	सां	नि	धप	म	मग	म॑	ध	ध
उर	प	ति	र	प-	ला	स्य-	तां	ड	व
रें	सां	सां	–	–	नि	ध	नि	म॑	ध
ले	–	त	–	–	ला	–	ग	री	–

संचारी

×		२			०		३		
सां	सां	सां	–	सां	ध	प	म	–	म
बं	द	न	–	बू	का	गु	ला	–	ल
प	म	म	म	मग	म॑	ध	सां	–	सां
छि	र	क	त	तकि	ने	न	भा	–	ल
रें	रें	सां	सां	सां	नि	नि	नि	ध	ध
ला	ल	गा	ल	मृ	ग	ज	ले	–	प
प	म	म	ग	ग	म॑	ध	नि	ध	–
अ	–	ध	–	र	दा	–	ग	री	–

राग बसंत (पंचम अंग)—ताल धमार

जसोदा नहि बरजे अपनो बाल ।
अपनो बाल रसिया गोपाल ॥ध्रुव॥ स्नान करन गई जमुनातीर ।
कर कंकन आभरन धरे चीर । मेरी जलप्रवाह तन गई दीठ ।
पाछेतें कान्ह मेरी मलत पीठ ॥१॥ यह अन्न न खाय मुख पीवे न खीर ।
यह केतिक बार गयो जमुनातीर । हों बारी री ग्वालिन तेरो ज्ञान ।
यह पलना झूले मेरो बारो कान्ह ॥२॥ वृंदाबन देखे में तरुन कान ।
घर आइके कैसे होत सयान । उठि लीरी ग्वालि जिय उपजी लाज ।
'सूरदास' ये प्रभुके काज ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
										म॑	—	ग	—
										ज	—	सो	—
म॑	ध	—	नि	—	सां	—	रें॒	सां	—	नि	—	ध	—
दा	—	—	न	—	हिं	—	ब	र	—	जे	—	—	—
प	प	—	म	—	ग	—	म	ध	—	म॑	—	ग	—
अ	प	—	नो	—	वा	—	—	ल	—	ज	—	सो	—

अन्तरा

×					२		०			३			
सां	सां	—	रे॒	—	सां	—	—	सां	—	नि	—	ध	—
अ	प	—	नो	—	वा	—	—	ल	—	र	—	स	—
म॑	ध	—	नि	—	सां	—	रें॒	सां	—	म॑	—	ग	—
या	—	—	गो	—	पा	—	—	ल	—	ज	—	सो	—

संचारी

×					२		०			३			
म	—	—	म	—	म	—	म	म	—	प	—	म	—
स्ना	—	—	न	—	क	—	र	न	—	ग	—	ई	—
ग	ग	—	म॑	—	ध	—	—	ध	—	म	—	ग	ख
ज	मु	—	ना	—	ती	—	—	र	—	क	—	र	अ
म॑	ध	—	नि	—	सां	—	सां	सां	—	नि	—	ध	—
कं	—	—	क	—	न	—	आ	भ	—	र	—	न	—
प	म	—	ग	—	म	—	ध	ध	—	सां	—	नि	—
ध	रे	—	—	—	ची	—	—	र	—	मे	—	री	—

आभोग

×					२		०			३			
सां	रें	–	गं	–	गं	–	मं	गं	–	रें	–	सां	–
ज	ल	–	प्र	–	वा	–	–	ह	–	त	–	न	–
नि	ध	–	म॑	–	ध	–	सां	सां	–	ध	–	प	–
ग	ई	–	–	–	दी	–	–	ठ	–	पा	–	–	–
प	ध	–	रें	–	सां	–	–	सां	–	नि	–	ध	–
छैं	–	–	तें	–	का	–	–	न्ह	–	मे	–	री	–
प	ध	–	ग	–	म॑	–	ध	ध	–	म॑	–	ग	–
म	ल	–	त	–	पी	–	–	ठ	–	ज	–	सो	–

राग वसन्त (पंचम अंग) ताल–तीव्रा

खेलत खेलत पोढी राधा, नवल लाल गिरिधर पिय संग ।
चोवा चंदन ओर अरगजा, झारत फिरत सकल सब अंग ॥१॥

बाजत ताल मृदंग अघोटी, बीना मुरली तानतरंग ।
'कृष्णदास' प्रभुकी छबि निरखत, मोहत कोटि अनंग ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सा	म	म	म	ग	म	म	प	म	ग	म॑	ध	सां	–
खे	ल	त	खे	–	ल	त	पौ	ढी	–	रा	–	धा	–
सांरें	सां	सां	–	सां	नि	ध	म॑ध	नि	ध	प	–	–	म
नव	ल	ला	–	ल	गि	रि	धर	पि	य	सं	–	–	ग

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
ध	म॑	ध	सां	—	सां	सां	गं	रें	रें	सां	सां	नि	ध
चो	वा	—	चं	—	द	न	ओ	र	अ	र	ग	जा	—
नि	ध	ध	म॑	ध	नि	सां	रेंसां	नि	ध	म॑	ध	सां	सां
झा	र	त	फि	र	त	स	कल	स	व	अं	—	—	ग

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सा	सा	म	म	—	म	म	प	म	ग	म॑	ध	सां	—
बा	ज	त	ता	—	ल	मृ	दं	ग	अ	धो	—	टी	—
रें	सां	—	नि	ध	म॑	—	ग	ग	म॑	ग	रे	सा	—
बी	ना	—	मु	र	ली	—	ता	न	त	रं	—	ग	—

आश्रयका पद, राग वसन्त—ताल त्रिताल

हमारे श्रीविट्ठलनाथ धनी ।
भवसागरतें तारि महाप्रभु, राखो सरन अपनी ॥१॥
जाको नाम रटत निसिबासर सेस सहस्र फनी ।
"छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल त्रिभुवन मुकुटमनी ॥२॥

स्थायी

×				२				०				३			
सा	—	म	म	म	—	म	म	म॑	म	ग	ग	म॑	ध	सां	सां
वि	—	ठ	ल	ना	—	थ	ध	नि	—	—	ह	मा	—	रे	श्री
—	रें	सां	सां	नि	—	ध	ध	म॑	—	ग	—	म॑	ग	रे	सा
—	वि	ठ	ल	ना	—	थ	ध	नी	—	—	—	—	—	—	—

अन्तरा

×				२				०				३			
ध	ध	म॑	ध	सां	सां	सां	–	रें	–	सां	सां	नि	–	ध	ध
भ	व	सा	–	ग	र	तें	–	ता	–	रि	म	हा	–	प्र	भु
प	–	म	ग	म॑	ध	नि	सां	रेंनि	ध	प	ग	म॑	ध	सां	सां
रा	–	खो	स	र	न	अ	प	नि	–	–	ह	मा	–	रे	श्री

संचारी

×				२				०				३			
म	–	म	–	म	–	म	म	प	म	ग	ग	म॑	ध	नि	सां
जा	–	को	–	ना	–	म	र	ट	त	नि	सि	बा	–	स	र
रें	–	सां	सां	नि	–	ध	ध	म॑	–	ग	–	म॑	ग	रे	सा
से	–	स	स	ह	–	सा	फ	नी	–	–	–	–	–	–	–

आभीग

×				२				०				३			
ध	ध	म॑	ध	सां	–	सां	सां	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	सां
छी	त	स्वा	–	मी	–	गि	रि	ध	र	न	श्री	वि	–	ट्ठ	ल
रें	सा	नि	ध	म॑	ध	नि	सां	नि	ध	प	ग	म॑	ध	सां	सां
त्रि	भु	व	न	मु	कु	ट	म	नी	–	–	ह	मा	–	रे	श्री

परिशिष्ट-१

इस ग्रन्थ में आई हुई तालों की मात्रा व बोल

आजकल बहुत से लोग कोई भी पद इच्छानुसार ताल में गाते हुए सुनाई पडता है, किन्तु ध्यान रखना चाहिये कि अष्टछापीय परम्परा की गायकी द्रुपद-अंग की है अतः आजकल ख्याल-गायकी के त्रिताल, आडाचौताल, रूपक, दीपचन्दी, दादरा, एकताल, जूमरा, झपताल, सूलताल इत्यादि तालों का प्रयोग करना प्राचीन परम्परा से विसंगत दिखाइ देता है, क्योंकि इन सब तालों का प्रयोग ख्याल की उत्पत्ति के बाद प्रचार में आने लगे, जो अधिकतर तबलों में बजाये जाते हैं, किन्तु द्रुपद-गायकी में पखावज का ही प्रयोग किया जाता है। असल में एकताल का आधार चौतालसे, झपताल का चर्चरी से, सूलताल का मठताल से, रुपक का तीव्रा से, आडाचौताल का प्राचीन ध्रुव-तालसे, (द्रुत आडाचौताल जिसको अर्ध आडा-चौताल कहते हैं वह प्राचीन चम्पकताल है, जो हमारे यहाँ आडा-चौताल की अपेक्षा अधिक प्रचार में है.) दीपचन्दी और झूमरे का आधार धमार से तथा दादरे का प्राचीन रुपक ताल से और त्रिताल का प्राचीन त्रिपुट तथा पटताल एवं आदिताल के आधार पर रचना बनी हुई मानी जाती है, जो आठ मात्रा के ताल हैं, किन्तु ख्याल उत्पत्ति के बाद इसको विलम्बित करके १६ मात्रा का ताल त्रिताल प्रचार में आने लगा।

पुष्टिसम्प्रदाय के कीर्तनगानके उपयोगी तालोंकी मात्रा व बोल एवं इस ग्रन्थमें आने वाले तालों की मात्रा व बोल.

(१) प्राचीन ताल रूपक-मात्रा ६

१	२	३	४	५	६
धा	तिट	धा	दिं	ता	किट
×		२			

(२) प्राचीन चम्पक ताल-मात्रा ७

१	२	३	४	५	६	७
धा	किट	तक	धुम	किट	धदि	गन
धात	धिन	नक	किट	तक	गदि	गन
×	२		३		४	

(३) तीव्रा (प्रचलित) ताल मात्रा ७*

१	२	३	४	५	६	७
धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन

(४) प्राचीन त्रिपुट (त्रिपट)-मात्रा ८

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	तिट	ता	किट	तिट	कत	गदि	गन
×				२		३	

(५) प्राचीन पट ताल-मात्र ८

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
×	२	३		४	५	६	

(६) प्राचीन जत-ताल (आधुनिक त्रिताल)-मात्रा ८

१	२	३	४	५	६	७	८
धा	धीं	धागे	धीं	तक	तीं	धागे	धीं
×		२		०		३	

---

* प्राचीत तिस्र जाति त्रिपुट का यह एक प्रकार है ।

(७) प्राचीन मठताल–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	किट	तक	धुम	किट	धा	किट	तक	गदि	गन
×				२		३			

(८) ताल सूलताल–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	तिट	कत	गदि	गन
×			०	२		३			

(९) ताल चर्चरी (प्राचीन अंग)–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
घा	गे	किट	धा	किट	ता	किट	धा	गदि	गन
×			२		०		३		

(१०) ताल–चर्चरी (झपताल अंग)–मात्रा १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	–	धा	गे	कि	ट	किट	धा	कि	ट
×		२			०		३		

(११) प्राचीन अठताल (आधुनिक चौताल)–मात्रा १२

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
प्रा.	धा	कि	ट	धा	किट	धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गन
चौ.	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गन
	×				२				३		४	

(१२) प्राचीन ध्रुव ताल (आधुनिक आडा चौताल)–मात्रा १४

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	धा	किट	द्धा	गे	दिं	ता	क	द्धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गन
प्र. २	धा	आग	धा	गे	दिं	ता	तिट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
	×		२				३				४			

(१३) ताल प्राचीन धमार (प्राचीन जत ताल)–मात्रा १४

१	२	३	४	५	६	७	९	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	–	–	धी	ट	धा	–	ग	दि	न्त	ति	स	ता	–
×			२				०			३			

(१४) ताल धमार–मात्रा १४

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क	धि	ट	घि	ट	धा	–	ग	ति	ट	ति	ट	ता	–
×					२		०			३			

(१५) ताल मत्त ताल–मात्रा १८ ×

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१८
धा	–	धि	ड	न	क	धि	ड	न	क	ति	ट	क	त	ग	दि	ग	न
×		०		२		३		०		४		५		६		०	

---

* प्राचीन जत ताल का एक प्रकार

× यह प्राचीन खट ताल का परिवर्तनशील

परिशिष्ट–२

अष्टछापीय परम्परा की प्राचीन रागमालाएँ

नन्ददासकृत रागमालाएँ ।

१. 'सारंग'नेनी री काहेको कियो हे एसो मान ।

'नंददास' 'केदारो' करिके, योंही बिहाइ गयो मान ॥३॥

देखिये ग्रन्थ–१, खण्ड–१, पृष्ठ–१८३ ।

२. मानिनी मान मेरो कह्यो काहेको रुसानी प्यारे 'स्याम' संग । सूधे क्यों न चित येरी मोतन 'हमीर' 'गोरी' 'कान्ह रह्यो तोसों रंग ॥१॥ तू जिन 'नट'री नागरसों ए 'बडहंसि', तेरो 'आडनि' पट तजि दीजे मेरी आली । 'नायकी' क्यों न होत 'काफी'के बचन सुनि, 'ललित' हिये गहि रहो बनमाली ॥२॥ एरी 'धनवंती' 'आसा' रहे तेरी 'पूरिये' मनोरथ पिय मन । कहे 'नंददास' तो 'सुहा'ग 'देवगान' करत को 'बिहाग' रात उठि अंकमाल बनठन ॥३॥

३. 'ए मन' मान मेरो कह्यो काहेको रुसानी प्यारे 'स्याम'सों सुधो क्यों न चितेरी । मोतन 'जेजेहुती' सोंति तेरी तिनहुकी जीत होति, 'सुघराइ' क्यों न करत 'बडहँसि' होति तेरी ॥१॥ करि विचार 'नायका' तू क्यों 'नट' जिन 'आडन' पर दिजेरी मेरी आली । 'काफी'के बचन सुनत 'ललित' कहे रस लैये, केसे के रिझैये उनको मन ॥२॥ अरी धन्य व्हे जू 'आसावरि' रहिये तेरी उन आगे केसे भरोंरी दिन । 'नंददास' 'देसाख' कहत बचन सुन 'कान्हर' आय पायन परे कइ आभरन उठि मिल अंक मालवन ॥३॥'

४. 'ए मन' मान मेरो कह्यो काहेको रिसानी प्यारी तू । × × × × × 'द्वारकेश' प्रभु 'वसंत' खिलावत याही ते बढत 'सुहा'ग ॥ २ ॥

देखिये ग्रन्थ–१, खण्ड–१, पृष्ठ–२१० ।

५. तृतीय गृह की प्रणालिकानुसार निम्न रागमाला सन्वतपंचमी के दिन शृंगारसमय गाई जाती है ।

भोर भयो जागे जाम लाल हो अब 'रामकली' उदै भयो भान । गुन की कली गुन पूरन प्यारी कहा अब होत 'देवगान' ॥२॥ भयो 'बिभास' आभास सब देखियत वलि बलि जाऊं तू सुनि लेरी कान । 'आसा' न करि तू अपुने प्रीतमकी 'सो रठ' समझि ले मन ही मन आन ॥२॥ 'सारंग' नाम जाको ताके पास जाय आली सो 'नट' भयो कहा करे अभिमान । चितवति चित 'पूरब' मुख बेठी 'मधुमाध' मद भयो तोकूं आन ॥३॥ ये क्रोध भयो 'गोरी' कोन गुनन ते 'ए मन' कहा करों कहा कहूं आन । 'केदारु'न दुख मिट गयो 'कान्हर' तेरो जीवनप्रान ॥४॥ रेन बिहाय गई प्यारी पिय पास गई मदनमोहन पिय अति ही सुजान । चलत 'हिंडोल' अंकमाल सोभा बनठन 'हरिदास'के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी 'ललित' बरन चित्त धरू ध्यान ॥५॥

६. 'कानरो' 'कल्यान' गान 'केदारो' 'हिंडोल' तान 'टोडी' 'गोरी' 'मारु' बाजतरी 'धनासुरी' । 'सारंग' 'देवगंधार', 'गूर्जरी' 'मेघमल्हार', 'जंगला' 'बिभास'हुकी थोरी थोरी आंसुरी ॥२॥ 'सोरठ' सोहे अलाप, 'भेरो' पडे प्रभात नीके गावे 'नट'–नाट स्यामाजुकी आंसुरी । थकित रहे खग मृग चुगत नहिं तृन एसी छबि मोहन बजाई बांसुरी ॥२॥

७. 'श्री' राग करत ब्रजसुंदरी 'गोरी' 'ई मन'सों प्यारी तू 'सारंग'– नेनी धाई मोहन के परि पाई । तोहे 'कल्यान' हरि-मिल माधोसों जाई ॥१॥ प्यारी दे 'कान्र' हृदयसूं कर जुध 'केदारे'की कोन गति । 'आसा' करत जलनिधिसुतासूं, उन जिय 'बसंत' ॥१॥ 'मारु'त त्रिविध तरनितनयातट 'ललित', लता, कुसुम, रचित अभिराम कली । सिज्या रुचीरी 'मेघ' चातक जेसे चितवत तोहे त्रिया 'भोपालि' । 'देसाग' बात तेरी 'भैरव'की अब बेर निकट भई 'धनासरी' लघु पीतांबर कहै भजन 'नट' ॥३॥

८. मल्हार की रागमाला हिंडोरा के भावकी

झूलत स्यामा प्यारी झुलवत आप बिहारी रमकि–रमकि झोटा देत हें माई । रतनजडित खंभ दोऊ डांडी चार अति सुहाई, गावत

'मल्हार' राग तान सुनाई ॥१॥ बरखि जलधार घननन गरजन करे दामिनी दमकि 'मारु'त जों धावे। देखिके प्यारी तब दामिनिकी दमकि डरपि घनस्यामकों उरही लावे ॥२॥ मधुरे सुरसों रटत पपैया अरु दादुर झनकार। सारस हंस कोकिला कूजत, मधुप करत गुंजार ॥३॥ 'मालव' राग अलापत भामिनि, स्रवनन झलकत भाल। कबहुक उतरि स्यामा प्यारी, झुलवति मदनगोपाल ॥४॥ झूलनकों आई व्रजवनिता, बोलत बचन रसाल। झोटा देत सखी ललितादिक, 'काफी'सुर गावत बाल ॥५॥ तेसीय रितु पावस मन भावन पहरि कसूंभी चीर। 'कल्यान'के प्रभु गिरिधर संग इहि बिधि क्रीडत जमुनातीर ॥६॥

९. *संग त्रियन बनमें खेलत रविजातट मुरलीधर मध्य रास नृत्यकला गुननिधान। सप्त सुरन तीन ग्राम गाय बजाय लिये आरोहि अवरोहि धुरन मुरन सम प्रमान ॥२॥ २. 'प्रथम राग भैरो' गाइये मन मोह लिये, चलतें अचल भये अचलतें चल भये, 'मालकोस'की तान लेले बान बेधत हमारो प्रान ४. राग 'हिंडोल' मन कल्लोल मीठे बोल लेत मन मोल ॥२॥ ५. 'मेघ' ज्यों बरखत रस बुंदन घुमड बिरहिनके मन हरे उमड। ६. 'श्री' राग गावत नेन नचावत ७. 'सोरठ' गाइये हो सुंदिर स्याम धुनि सुनि जागत तन मन काम ॥३॥ नवल 'केदारो' राग गावत लेत सुलप गति सुघर सुजान। ९. व्रजाधीश सरदरेन सुखविलास मदनमोहन पर वारों तन मन प्रान ॥ ४ ॥

*१. राग भैरवी–ताल द्रुपद २. राग भैरव–ताल आडा चौताल। ३. राग मालकौस–ताल जूमरा। ४. राग हिंडोल–ताल त्रिताल। ५. राग मेघ मल्हार–ताल चर्चरी। ६. राग श्री–ताल सुरफाग। ७. राग सोरठ–ताल सवारी। ८. राग केदार–ताल धीमा त्रिताल। ९. राग भैरवी–ताल एकताल

---

* प्रत्येक तूक क्रमशः १ मल्हार–चौताल, २. मारु–चर्चरी, ३. सोरठ–आडचौताल (तेवरा), ४. मालव–त्रिताल, ५. काफी–धमार, ६. कल्यान–चलती।

परिशिष्ट–३

द्रुपदगान की परम्परा

भारतवर्ष में द्रुपदगान की परम्परा के अवशेषों में देखा जाय तो (१) राज्याश्रित द्रुपदगायकों की परम्परा और (२) पुष्टिमार्गीय अष्टछापीय कीर्तनकारों की परम्परा, ये परम्पराएँ दृष्टिगत होती हैं। ये परम्पराएँ एकदूसरी से निकट होते हुए भी कुछ साम्य-भेद दृष्टिगत होते हैं, जिसका अत्र विचार करना उचित समझता हूं।

भारतीय संगीत के द्रुपद-अंगकी प्राचीन चार प्रकारों की बानी के सम्बन्ध में हम प्रथम भाग के दूसरे खण्ड में लिख चूके हैं। यह चारो वानियों की परम्परा का कोई सन्तोषजनक स्पष्टीकरण प्राप्त न होने से अष्टछापीय द्रुपद-अंग की गोबरधारी यानी गोबरहारी बानी का विवेचन भी किया गया है।

आजकल द्रुपद के घरानेदार गायकों की गायकी से अष्टछापीय परम्परा के कीर्तनों की द्रुपदगानशैली में जो कुछ भेद दिखाई देता है, जो हवेली-संगीत नाम से आज प्रचार में है वह, अन्य गायकों की गायकी से कैसे और कहां कहां अलग रहती है यह साम्य-भेद दो-तीन पच्चीसी के पूर्व विद्वानों को बताने जितने सरल थे वह उतनाही आज कठिन बन गया है तथापि यथामति यथानुभव निम्नांकित स्पष्टीकरण करना कर्तव्य समझता हूं।

१. गोबरधारी,* २. डागुरी, ३. खंडारी और ४. नौहारी इन चार बानियों की मान्यता का यदि स्वीकार किया जाय तो प्रचलित

---

* यहां "गोवर्धन" के पर्यायशब्द जैसा 'गोबर' को कहा गया है। पुष्टिसम्प्रदाय के प्रत्येक मन्दिर में तथा अन्य वैष्णवों के घर एवं व्रजमण्डल में घर-घर में दिवाली के दूसरे दिन गोबर के गोवर्धन बना कर पूजा करने का आज भी रिवाज चालू है।

आजकल द्रुपदगानमें दूगन, चौगुन, छगुन, अठगुन, सवाई, दौढी आदि प्रकार लिये जाते हैं।

द्रुपदगान की शैलियों में आज गोबरधारी और डागुरी बानियों की झांकी अधिकतर दिखाई देती है । पुष्टिसम्प्रदाय का संगीत साहित्य से भरा हुआ है और यह साहित्य संगीत के माध्यम से गाया जाता है । भगवान् प्रति चित्तवृत्ति लगाने के लिये भगवत्सेवा का मुख्य कर्तव्य समझा जाता है ।

द्रुपद के ये लयप्रकार गणित से सम्बन्धित हैं । इस प्रकार की परिपाटी होने के कारणों में यह भी एक मान्यता है कि उपर्युक्त लय-प्रकारों की ओर गायक का ध्यान चला जाता है इस लिये कीर्तन का उद्देश भगवान् की लीला की भावना का जिन पदो में चिन्तन रखना चाहिये वह टूट जाता है और गणित की गिनती में सुलझ जाता है ।

हमारे यहां बन्दिश अनुसार अधिकतर मध्यलय में सीधे सादे गाने की प्रथा है । समयानुसार क्वचित् विलम्बित में गाया जाता है, किन्तु इनमें विलम्बित गति का प्रमाण एक सेकन्ड से अधिक होना ठीक नहीं है ।

जिस राग का द्रुपद गाना हो उसी राग का परिचय कराना यही आलाप का मतलब है । आजकल द्रुपद के गान–वादन के कलाकार १–२ घण्टे तक आलाप करते रहते हैं और गीत को दश मिनट में ही पूरा करते हैं । ऐसा कृत्य हमारी कीर्तनगान की द्रुपद–परम्परा में किया नहीं जाता । वास्तव में यह आलाप द्रुपद–प्रबन्धों की बन्दिशों के आधार पर किया जाता है । इस आलाप में गायक लोग नोम–तोम, तनन, री, रे, ना इत्यादि शब्दों का प्रयोग करते हैं । कहा जाता है कि ये शब्द घराने के ऊगम के पश्चात् प्रचार में आने लगे ।

जिस बन्दिश का द्रुपद पेश करना हो उसी बन्दिश के आलाप करने की पद्धति के विरुद्ध अन्य स्वर की सूरावली करते हुए भी नजर आते हैं । जैसे विहाग के कुछ द्रुपद धमारो में नि से प और ग से सा की मींड के प्रयोग के अतिरिक्त ध ओर रे लिये नहीं

जाते हैं । इस प्रकार के बन्दिशों की चीजों के पूर्व आलाप में ध और रे का भी प्रयोग करना विसंगत कहा जायेगा ।

हमारी प्रणाली में आलापचारी विशिष्ट प्रकार के उत्सव-त्यौहार और कीर्तन के आरम्भ में और ऋतुपरिवर्तन के आगम-समय गाये जाने वाले राग के कीर्तन के पहिले उसी राग की आलापचारी की जाती है, जिससे भगवन्नाम के माध्यम से राग के आगम का परिचय हो जाता है ।

"गीर्वाणमध्यदेशीयभाषासाहित्यराजितम्" तदनुसार हमारे कीर्तनगान में भाषा-साहित्य को मुख्य माना जाता है । यह साहित्य भगवान् की विविध लीलाओं से निर्भर है, जिसको वेदमन्त्रोच्चार के समान महत्ता दी गई है, अतः सम्प्रदाय की भावना और साहित्यिक सम्बन्ध को भूलना नहीं चाहिये । काव्य के शब्द, राग, रचना की सुरावली, आवर्तन, ताल, मात्रा, इत्यादि ध्रुपदगान में आवश्यक माने गये हैं ।

(१) चौताल में गाये जाने वाले ध्रुपदों में अधिकतर चार आवर्तन होते हैं । क्वचित् तीन आवर्तन के ध्रुपद भी दृष्टिगत होते हैं । प्राचीन परम्परानुसार प्रत्येक पंक्ति में चार आवर्तन किये जाते हैं । (अ) प्रत्येक आवर्तन में दो, तीन या चार शब्दों का समावेश होता है । (ब) जिनमें लघु गुरु दृष्टि से बारह मात्रा का एक आवर्तन बनता है । (क) जिनमें शब्दों के खण्ड तथा ताल के खण्ड भिन्न होते हैं ।

(१) दो शब्दों का प्रत्येक आवर्तन देखिये ।

शब्दोंके खण्ड ।

(अ) तेसोई । वृन्दावन ॥ तेसीय । हरितभूमि ॥
तेसीय । बीरबधू ॥ चलत । सुहाई ॥ (हिंडोला का पद)

(ब) बृन्दावन । बंसीबट ॥ कुंज कुंज । जमुनातट ॥ (रास का पद)

लघु गुरु अनुसार बारह मात्राओं का आवर्तन निम्न प्रकार ।

बृं- | दा- | ब न | बं- | सी- | ब ट |

(२) एक आवर्तन में तीन शब्दों का उदाहरण।

(अ) केसरकी । धोती । पहिरे ॥ (बधाई)

(ब) चलहु । राधिके । सुजान ॥ (रास का पद)

चल | हुरा | -धि | के- | सुजा | -न

(३) एक आवर्तन में चार शब्दों का उदाहरण।

(अ) बेठे | हरि | राधे | संग ॥ (कुंज का पद)

(ब) आज | और | काल्ह | और ॥ (नित्य शृंगार)

(अ) बे- | ठे- | हरि | रा- | धे- | संग

(ब) आ- | ज ओ | -र | का- | ल्ह ओ | -र

उपर्युक्त उदाहरणों के पश्चात् शब्दों के खण्ड तथा ताल के खण्ड की भिन्नता को ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण है। ताल के खण्ड दो मात्राआं के माने जाते तो छ खण्ड होते हैं और शब्दों के खण्ड की और देखा जाय तो अधिकतर तीन तीन मात्राओं की संगत से और क्वचित् ६ मात्राओं में शब्द का खण्ड पूर्ण होता है।

(२) चौताल के बाद मठताल यानी आज के सूलताल में गाये जाने वाले पदों की बन्दिश का विचार करें। जिनमें प्रथम शब्दों के खण्ड अलग बता कर उनकी मात्राओं के अनुसार ताल के खण्ड भी बताये गये हैं। इस ताल में भी आवर्तन की संख्या चार तथा प्रत्येक आवर्तन में शब्दों की संख्या दो या तीन होती है। इस ताल की मुख्य पहचान यह है कि मठताल का प्रथम खण्ड चार मात्राआं का होने से प्रत्येक पंक्ति के प्रथम शब्द की लघु गुरु मिला कर मात्रा चार होनी चाहिये। पश्चात् दूसरे या तीसरे शब्द की मात्राएँ खण्ड के अनुसार रखी जाती हैं।

जैसे

आवन । कहि । गये ॥ अजहू । न । आये ॥

सब निस । बीती । मोहे ॥ गिनतही । तारे ॥

आ-वन । कहि । -गये- ॥ अजहू । न- । आ-बे-

(३) सम्प्रदाय के कीर्तनों में 'चर्चरी' ताल के पदों की संख्या कम नहीं है। आजकल उनकी प्राचीनता दिखाई नहीं देती। उनका स्थान आधुनिक झपताल ने पकड़ लिया है, अतः सम्प्रदाय की प्राचीन चर्चरी ताल की पहचान के लिये निम्न बात ध्यान में रखनी चाहिये।

इस ताल के पदों में भी अधिकतर चार आवर्तन होते हैं। प्रत्येक आवर्तन में अधिकतर तीन शब्द होते हैं, जिनमें प्रत्येक पंक्ति के प्रथम शब्द की मात्राएँ तीन होती हैं, अतः प्रथम खण्ड तीन मात्राओं का ही था, जो आजकल झपताल अंग में दो मात्राओं का प्रचार में है।

शब्दों के खण्ड—
आज । नंदलाल । मुख ॥ चंद् । नेन न । निरखि ॥
परम । मंगल । भयो ॥ भवन । मेरे ॥
मात्राओं के खण्ड
आ–ज । नंद् । ला– । लमुख ॥ चं–द् । ने– । नन । नि र ख
परम । मं– । गल । भयो– ॥ भवन । मे– । रे– । – – –

चौताल धमार आडाचौताल इत्यादि ध्रुपद–पद्धति के कीर्तन के उठाव का आरम्भ विशेष कर के सम से होता रहता है, किन्तु भिन्न भिन्न बन्दिश के अनुसार दूसरी तीसरी और चौथी ताल से या खाली से उठाव वाले पदों की संख्या भी कम नहीं हैं, किन्तु खेद की बात है कि इस प्रकार के गाने वाले कीर्तनगायक आजकल कम नजर आते हैं।

पुराने कीर्तनकार पढेलिखे नहीं थे तथापि वे अपनी याददास्त के लिये उत्सव त्यौहार हिंडोरा वसन्तधमार इत्यादि समय गाये जाने वाले कीर्तनों को अलग अलग जैसे भी उनको लिखना आता था इस प्रकार वे लिख कर गुटका (संग्रह) बना रखते थे। इसमें बन्दिश अनुसार उठाव लिखा हुआ कहीं कहीं दृष्टिगोचर होता है।

जैसे कि चौताल में सम से आरम्भ होने वाले कीर्तन के पास (उठान सम से), ग्यारहवी मात्रा से आरम्भ होने वाले कीर्तन के पूर्व

(उठान चौथी से) और नव मात्रा से आरम्भ होने वाले के पूर्व (उठान तीसरी से) तत्पूर्व सातवीं मात्रा से आरम्भ होने वाले के पूर्व (उठान खाली से) इस प्रकार लिखा हुआ दृष्टिगोचर होता है। इस ग्रन्थ में इस प्रकार के भिन्न भिन्न उठाव वाले पद स्वरलिपि में निबद्ध किये हुए हैं, जिनके अभ्यास से उसी उठाव के अन्य पदों का ज्ञान प्राप्त करने में सरलता होगी।

जैसे चौताल की भिन्न भिन्न बन्दिश के पदों के उदाहरण इसी पुस्तक में से दिये जा रहे हैं।

(अ) उठान सम से
  (१) आजुको सिंगार देख्यो–राग विलावल, पृष्ठ १०८
  (२) आगे गाय पाछे गाय–राग पूर्वीकल्याण, पृष्ठ २५२

(ब) उठान दसवीं मात्रा से
  (१) हेली रसमय श्रीवल्लभसुत–राग टोडी, पृष्ठ १४९
  (२) तेरी भौंहकी मरोरनतें–राग अडाना, पृष्ठ ३७९

(क) उठान नवमी मात्रा से
  (१) सब मिलि आवो गावो–राग आसावरी, पृष्ठ १३७
  (२) आज धनि भाग हमारे–राग कान्हरा, पृष्ठ ३५३

(ड) उठान आठवीं मात्रा से
  (१) ए आजु अरुन अरुन डोरे–राग अल्हैया विलावल, पृष्ठ ११०
  (२) जलको गई सुघर नेह भरि लाई–राग अडाना, पृष्ठ ३७६

(ई) उठान सातवीं मात्रा से
  (१) भलोरे मेई आये हो पिय–राग गौड सारंग, पृष्ठ १९७
  (२) बल बल हो तनक तनक–राग ईमन, पृष्ठ ३०३

इस प्रकार ताल धमार में गाये जाने वाले पदों की ओर भी ध्यान रखना जरूरी है। धमार के पदों के उठाव में दो प्रकार प्राप्त होते हैं।

(१) सम से उठान वाले और (२) सम के पूर्व दो, चार और कुछ अधिक मात्राओं से उठान वाले पद। सम से उठान वाले पद में विशेष करके आधुनिक दीपचन्दी और अर्धआडाचौताल यानि चपकताल के अंग का आभास होता हैं, क्योंकि धमार के साथ झांझ बजाने में एक मान्यतानुसार १, ४, ६, ८, ११ और १२ मात्रा पर तालस्थान बताते हैं, यानि १४ मात्राओं में ६ ठोके बजाते हैं, किन्तु हमारी मान्यतानुसार आठवीं मात्रा का ठोका वर्ज्य कर के १, ४, ६, ११ और १३ इन पांच ठोकें देना उचित है।

दूसरे प्रकार में समताल के पूर्व उठान वाले धमारों में १, ६, ११ और १३ वीं मात्रा पर ताल और आठवीं मात्रा पर खाली बताना योग्य मानता हूं। ये दोनों प्रकारों के उदाहरण इस ग्रन्थ में से प्राप्त होंगे।

इसके अतिरिक्त हमारे द्रुपद भक्तिप्रधान होने से गायक को काव्य के भाव दृष्टि समक्ष रखना होता है, क्योंकि कीर्तनभक्ति का हेतु भगवान् में मन लगाना यही है और राज्याश्रित द्रुपद-घराने के गायकों का ध्यान लोकरंजन की और तथा अपनी प्रशंसा बढ़ाने की वृत्ति के कारण आजकल शब्दों की तोड–मरोड़ तथा सरगम के स्वरों का प्रयोग उपरांत आड़ी–तेड़ी लयों में तिहाई आदि का प्रयोग किया जा रहा है। जो अष्टछापपरम्परा में लिया नहीं जाता है। इस प्रकार की संक्षिप्त समालोचना की अधिक चर्चा स्थलसंकोच के कारण यहाँ समाप्त करता हूं।

राग अडाना "तेरी भौंहकी मरोरनते" संचारी (अनु. पृष्ठ ३८०)

×	–	०	–	२	–	०	–	३	–	४	–
सां	–	–	नि	ध	ध	नि	प	प	प	–	प
ज्यो	–	–	ज्यो	–	न	चा	–	वे	बा	–	ल
नि	सां	–	रें	–	सां	नि	सां	–	नि	–	प
त्यों	–	–	त्यों	–	ना	च	त	–	ला	–	ल
सां	सां	–	नि	प	प	ग	–	म	रे	–	सा
अ	व	–	तो	–	म	या	–	–	की	–	जे
नि	सा	–	रे	ग	प	नि	ध	नि	प	–	प
च	ली	–	ये	–	नि	कुं	–	ज	धा	–	म

"अद्भुत डोल बना" पद की संचारी (अनु. पष्ठ ७६)

×					२		०			३			
सां	सां	–	सां	–	सां	–	ध	–	–	प	–	ष	–
प	र	–	म	–	वि	–	चि	–	–	त्र	–	र	–
नि	–	–	ध	प	म	–	ग	म	–	प	–	–	–
च्यो	–	–	वि	–	श्व	–	क	र	–	मा	–	–	–
नि	–	–	ध	–	प	–	म	ग	–	ग	म	प	म
ही	–	–	रा	–	–	–	ला	–	–	ल	–	–	म
ग	म	–	ग	–	म	–	रे	–	–	सा	–	–	–
नी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

"डोल झूलत है" पद का संचारी (अनु. पृ. ४१४)

×					२		०			३			
ध	प	ग	प	–	प	–	ध	–	–	प	–	–	–
छि	र	–	क	–	त	–	चो	–	–	वा	–	–	–
नि	–	–	ध	–	ध	–	नि	ध	–	प	–	प	–
चं	–	–	द	–	न	–	वं	–	–	द	–	न	–
ध	ध	–	प	–	प	–	ग	रे	–	सा	–	रे	–
उ	ड	–	त	–	अ	–	बी	–	–	र	–	गु	–
प	–	–	रे	–	–	–	सा	–	–	–	–	–	–
ला	–	–	–	–	–	–	ला	–	–	–	–	–	–

आसीस के रसिया (संचारी आभोग अन्तरानुसार)

चिरजीयौ होरीको रसिया ।
जोंलों सूरज चंद उजेरो, तोंलों व्रजमें तुम बसिया ॥१॥
नित-नित आवो होरी खेलनकों, नित-नित गारी हँसिया ।
'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलनकों पीत पिछोरी कटि कसिया ॥२॥

स्थायी

×		२		०		३		×	२	०		३	
प़	नि़	नि़	–	सां	–	नि़	सा	रे	पम	मरे	–	सा	सा
जी	–	यो	–	हो	–	री	–	को	–र	सिया	–	चि	र
रे	नि़	सां	–	–	–	सा	नि़						
जी	–	यो	–	–	–	चि	र						

अंतरा

×		२		०		३		×	२	०		३	
नि	–	नि	–	सा	–	नि	सा	रे	मरे	सारे	नि़	सा	–
जों	–	लों	–	सू	–	र	ज	चं	–द	उजे	–	रो	–
प	–	प	ध	प	म	म	रे	रे	पम	मरि	–	सा	सा
तों	–	लों	–	व्र	ज	मैं	–	तु	मब	सिया	–	चि	र

परिशिष्ट–४

संदर्भ–ग्रन्थसूचि

संस्कृत

१. कठोपनिषद्
२. गीतगोविन्द
३. छांदोग्योपनिषद्
४. तैतरीयसंहिता
५. दशश्लोकी–निम्बार्काचार्य
६. नारदपंचरात्र
७. पद्मपुराण
८. भरतनाट्यशास्त्र
९. भक्तिसूत्र–नारद
१०. भक्तिसूत्र–शाण्डिल्य
११. श्रीमद्भागवत
१२. महाभारत–शान्तिपर्व
१३. लक्ष्यसंगीत
१४. वेदचतुष्टय
१५. स्कन्दपुराण
१६. संगीतदर्पण
१७. संगीतपारिजात
१८. शतपथब्राह्मण

हिन्दी

१९. अष्टछापपरिचय
२०. अष्टछाप के वाद्ययन्त्र
२१. कांकरौली का इतिहास
२२. कृष्णदास (अधिकारी)
२३. कुम्भनदास
३४. खटऋतुवर्णन
२५. श्रीहरिरायजी का पदसाहित्य
२६. चतुर्भुजदास
२७. चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता
२८. छीतस्वामी
२९. तालदीपिका
३० तृतीय गृह–कीर्तनप्रणालिका
३१. द्रुपदस्वरलिपि
३२. २५२ वैष्णवन की वार्त्ता
३३. नित्यपदसंग्रह
३४. परमानन्दसागर
३५. प्राचीनवार्त्तारहस्य
३६. भरत का संगीतसिद्धान्त
३७. भारतीय तालमंजरी
३८. मृदंगसागर
३९. मारिफून्नगमात
४०. रागकल्पद्रुम
४१. बसंतपदसंग्रह
४२. रागविज्ञान
४३. वर्षोत्सवपदसंग्रह
४४. स्वामी हरिदासजी
४५. सूरसारावली
४६. संगीतशास्त्र
४७. संगीतसम्राट् तानसेन
४८. हितचौरासी

४९. हिन्दुस्तानसंगीतपद्धति-भातखण्डे, शास्त्र भा. १, २; ३, ४,
५०. हिन्दुस्तानसंगीतपद्धति, क्रमिक भाग २ से ६

गुजराती

५१. उत्तर हिन्दुस्तानी संगीतनी संक्षिप्त ऐतिहासिक समालोचना
५२. गायनवादन पाठमाला
५३. गोस्वामी कनैयालाल महाराजनु 'जीवन'
५४. गुजरातमां संगीतनुं पुनर्जीवन
५५. मूलाधार
५६. वैष्णवधर्मनो संक्षिप्त इतिहास
५७. संगीतकलाधर
५८. संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन
५९. संगीतादित्य
६०. संगीतशास्त्र
६१. श्रीविठ्ठलेशचरितामृत
हिन्दी मासिक-"कल्याण-भगवन्नाम महिमा और प्रार्थना अंक", 'वल्लभीयसुधा', गुर्जर मासिक-'अनुग्रह' और 'वैश्वानर'

Bhakti Sangeet Udbhav aur Vikas Part 2
20934 PMVS of Canada

लेखक के अन्य प्रकाशन

(१) संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन	(अप्राप्य)
(२) संगीतकाव्यसुधा	न्यो. रु. ३-५०
(३) संगीतपाठावली	(अप्राप्य)
(४) संगीतसुबोधिनी	न्यो. रु. २०-००
(५) वर्षोत्सव कीर्तनसंग्रह भाग-१	(अप्राप्य)
(६) वर्षोत्सव कीर्तनसंग्रह भाग-२	(अप्राप्य)
(७) वसंत धमारसंग्रह	(अप्राप्य)
(८) संक्षिप्त नियम-श्रीयमुनाजीनां पद धोळ	(अप्राप्य)
(९) प्राचीन धोळ-पदसंग्रह	न्यो. रु. १०-००
(१०) वल्लभाख्यान-मूलपुरुष	(अप्राप्य)
(११) नित्यकीर्तनसुधा	(अप्राप्य)
(१२) नित्यपदसंग्रह	न्यो. रु. ३-५०
(१३) हिन्दी धोळपदसंग्रह (संपादक)	(अप्राप्य)
(१४) कीर्तनपद्यावली (संपादक)	(अप्राप्य)
(१५) संक्षिप्त बधाईसंग्रह	न्यो. रु. २-००
(१६) गुजराती नाटकोनां गीतोनी सरगम (स्वरलिपि)	(सस्तु साहित्य प्रकाशन)
(१७) अष्टछापीय भक्तिसंगीत, उद्भव और विकास भाग-१ (खण्ड १-२)	न्यो. रु. ५०-००

(अप्राप्य पुस्तकों का आर्थिक सहायता मिलने पर पुनर्मुद्रण किया जायेगा।

प्राप्तिस्थान एवं सम्पर्क—

अष्टछाप संगीत कलाकेन्द्र
६०, नायकनगर,
अमदावाद-३८० ०१४